AN ISO 9001 CERTIFIED SEED COMPANY

समृध्धि का एक ही नाम

बोईए

वेस्टर्न

बीज तमाम

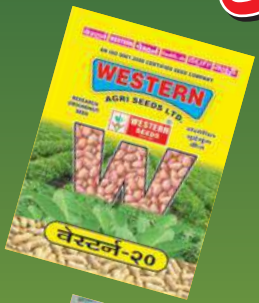

WESTERN SEEDS ®
Since 1983
" MORE FOR ALL "

वेस्टर्न एग्री सीड्स लीमीटेड

प्लोट नं. 802/11, वेस्टर्न हाउस, जी.आई.डी.सी. (इन्जी.) एस्टेट,
सेक्टर-28, गांधीनगर-382 028 गुजरात (भारत)
फोन : 079-23211891, 079-23212427, 8485901891
www.westernagriseed.com | E-mail : Info@westernagriseeds.com

किसान पोथी

नाम :

पता :

गाँव का नाम :

तहसिल :

जिला :

फोन नं. :

किसान कार्ड नंबर :

" MORE FOR ALL "
WESTERN SEEDS®
Since 1983

WESTERN AGRI SEEDS LIMITED

Gandhinagar-382 028, Gujarat

॥ हनुमान चालीसा ॥

(दोहा)

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरों पवन-कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ।

(चौपाई)

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥१॥
राम दूत अतुलित बल-धामा। अंजनि पुत्र पवनसुत नामा॥२॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥३॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा॥४॥
हाथ बज्र आरु ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥५॥
शंकर सुवन केसरी नंदन। तेज प्रताप महा जग वन्दन॥६॥
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥८॥
सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रुप धरिं लंक जरावा ॥९॥
भीम रुप धरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज संवारे ॥१०॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३॥
सनकादिक बह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेश्वर भय सब जग जाना ॥१७॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानु । लील्यो ताहि मधुर फल जानु ॥१८॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख्र माहीं । जलधि लाँधि गये अचरज नाहीं ॥१९॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डर ना ॥२२॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥२३॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवैं । महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमंत बीरा ॥२५॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥

सब पर राम तपस्वी राजा । तीनके काज सकल तुम साजा ॥२७॥
और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ॥२८॥
चारों जुग प्रताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥३०॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहां जन्म हरि-भक्त कहाई ॥३४॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमंत सेई सर्व सुख करई ॥३५॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै, हनुमंत बलबीरा ॥३६॥
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥३७॥
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥३८॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥४०॥

(दोहा)

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रुप ।
राम लखैन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

नित्यपावन-स्मरण

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमःप्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२॥

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥३॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥४॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥५॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥६॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥७॥

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥८॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रध्धारुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्टिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥

प्यारे दोस्तो,

आप जानते है कि भारत कृषि उत्पादन पे निर्भर राष्ट्र है । राष्ट्र की प्रगति में कृषि एवम् कृषिसे संलग्न व्यवसायको का बहुमुल्य हिस्सा है। राष्ट्रका आर्थिक नियमन सिर्फ कृषि उत्पादन के उपर ही निर्भर है । इसलिए कृषि उत्पादनो में अधिकतम सफलताके लिए अच्छा बीज ही मुख्य बुनियाद है । इसलिए कृषि वैज्ञानिकों के आविष्कार, सरकार के सहयोग और किसानोने स्विकृत की हुई आधुनिक कृषि टेक्नॉलाजी की वजह से आज हम हरित, पीली, श्वेत और श्वेत गोल्ड क्रांति लाने में सफल हो सके है ।

आजादी के समय देशकी आबादी सिर्फ ४६ करोड होने पर भी हमे विदेशो के निम्न कक्षाके अनाज खाकर परावलंबी होके जीना पडता था । लेकिन आज आबादी बढकर करीब एक अरब से ज्यादा होने पर भी, अपने सक्षम कृषि वैज्ञानिको, सरकार, कंपनीयों और महेनतकश, प्रगतिशील किसानोकी बदोलत आज हम बहुविध कृषि पेदाशो के अधिकतम उत्पादन के साथ आत्मनिर्भर बन सके है, साथ मे कृषि उत्पादनोकी निकास करके विदेशी मुद्रा भी अर्जित कर रहे है ।

अपनी वेस्टर्न एग्री सीड्स लि. कंपनी किसानोकी आवश्यकता अनुसार विविध भूभागोकी स्थितिके अनुरुप अलग अलग कृषि

पेदाशोकी नई किस्मका संशोधन कृषि वैज्ञानिको के सहयोग से कर रही है । जिसे भारत सरकार के वैज्ञानिक और औद्योगिक संशोधन विभाग द्वारा संशोधन एवम् विकास डिविजन (आर.अेन्ड डी.) की मान्यता प्राप्त हुई है । हमारी कंपनी समग्र भारतमें कृषि बीज की बिक्री और अन्य राष्ट्रोमें निकास कर रही है । इस मोके पर कंपनीके बीज उत्पादन विषयक जानकारी प्रस्तुत करते हुए आनंद हो रहा है । हमे विश्वास है की ये जानकारी आपके लिए उपयोगी बनी रहेगी ।

ज्यादा जानकारी के लिए आप हमारा प्रत्यक्ष या टेलिफोन से संपर्क कर सकते है । हम आपका कृषि विषयक पूरा मार्गदर्शन करेंगे । किसान के हितमें अगर कोई सुझाव या सूचना हो तो आप हमे अवश्य भेज सकते है, जिसे हम अगली पुस्तिकामें शामिल कर सकते है ।

जय जवान - जय किशान - जय विज्ञान

धन्यवाद...

डॉ. एन. पी. पटेल
मेनेजींग डायरेक्टर
वेस्टर्न एग्री सीड्स ली.

विशेष सुचना

यह माहिती पुस्तिकामे निर्दर्शित अलग अलग किस्मो का उत्पादन क्षमता जमीन, हवामान एवं देखरेख पर अवलंबित है।

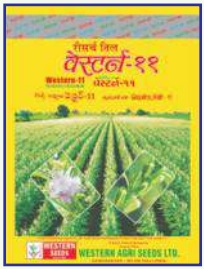

रीसर्च तील
वेस्टर्न-११

- वर्षाऋतु, अर्धशीत और गर्मी की मौसम के लिये उपयुक्त । यह किस्म ८० से ९० दिन में पकती है ।
- पौधे की मध्यम उचाई (९० से १०० से.मी.) और शुरु से २ से ४ शाख्राए निलकती है ।
- डींडवे शाख्रा की शुरु से एक दुसरे के सामने गुच्छे में निकलते है ।
- दाना चमकीला सफेद होने से ज्यादा बाजार भाव मिलता है और निर्यात के लिये उपयुक्त किस्म ।
- पौधे के सभी भाग व डिंडवे पे रुवांटी होने से किटक का उपद्रव कम रहता है ।
- पुष्पगुच्छ की विकृत्ति (फायलोडी) व कालवण शिर्ष रोग (बेक्टेरीयल ब्लाइट) आने की संभावना कम ।
- बडा दाना (१००० दाने का वजन ३० ग्राम) और तेल की मात्रा ४८ से ५० प्रतिशत ।

रीसर्च तील

वेस्टर्न-सूर्या

- वर्षा ऋतु, अर्ध शीत और गर्मी के मौसम के लिये अनुकूल।
- पौंधे की नियंत्रित मध्यम उंचाई; ८५ से ९५ से.मी. और जल्द पकनेवाली किस्म; ७५ से ८५ दिन।
- पौधे के शुरु से ही डींडवे आने की शुरुआत होती है।
- डींडवे दो से ज्यादा समुह में और पत्ते की एक शाखा छोडकर आमने सामने नज़दिक आते है।
- डीडवे ज्यादा संख्या में आते है, एक पौंधे में ५५ से ६५ सरेराश आते है।
- दाने का रंग सफेद, मध्यम कद, १००० दाने का वज़न २७-२९ ग्राम।
- डींडवे मध्यम कद के, भरावदार और पकने पर भी फटकर दाने बहार निकलते नहीं है।
- पौंधे की विविध बिमारीओं और कीटक के उपद्रव के सामने अंशत: प्रतिकारक।
- तेल की मात्रा ४६-४८ प्रतिशत रहती है।
- अन्य किस्मो के मुकाबले कीसी भी मौसम में पौंधा टिकने की ज्यादा क्षमता रखता है।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे।

रीसर्च तील वेस्टर्न ब्लेक

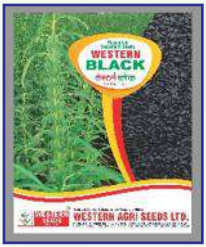

- वर्षाऋतु, अर्धशीत और गर्मीकी मौसम के लिये अनुकुल।
- पौंधे की अनियंत्रित ज्यादा वृध्धि; ११० से १२० से.मी. और मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म; ८५ से ९५ दिन।
- पौंधेके मध्यसे ५ से ७ लम्बी शाख्राए निकलती है और शाख्राकी पुरी लंबाई तक डींडवे आते हैं।
- डींडवे अलग-अलग, पत्ते की एक शाख्रा छोडकर आते हैं।
- एक पौंधे पे ७५ से ८५, मध्यम लंबाई के डींडवे आते हैं। डींडवे पकने पर भी फटते नही।
- दाने काले, चमकीले, बडे कदके, १००० दाने का वजन २९ से ३१ ग्राम।
- पौंधे की विविध बिमारीयां और कीटक के उपद्रव के सामने अंशत: प्रतिकारक।
- तेल की मात्रा ४४ से ४६ प्रतिशत, काले रंग के दाने की वजहसे निर्यात् के लिये उपयुक्त किस्म।

वेस्टर्न सीड्स, अपना सीड्स।

रीसर्च तील वेस्टर्न अर्ली

- वर्षाऋतु और अर्धशीत मौसम के लिये अनुकुल।
- पौधे की कम उंचाई : ६० से ७० से.मी. और जल्द पकने वाली किस्म: ६५ से ७५ दिन।
- पौंधे के शुरु से ३ से ४ मध्यम लम्बी शाख्राए निकलती है और मध्यम कद के डींडवे शुरु से आते है।
- डींडवे दो से ज्यादा समुह में आमने-सामने नज़दिक आते हैं।
- एक पौधे पे ४५ से ५५ सरेराश डींडवे आते है।
- दाने का रंग सफेद, मध्यम कद, १००० दाने का सरेराश वजन २५ से २७ ग्राम।
- डींडवे कम लंबाई के और पकने पर भी फटकर दाने बहार निकलते नही।
- पौधे की विविध बिमारीयां और कीटक के उपद्रव के सामने अंशत: प्रतिकार।
- तेल की मात्रा ४५-४७ प्रतिशत रहती है।
- अन्य किस्मो की तुलना में जल्द पकने वाली किस्म है।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

रीसर्च तील वेस्टर्न समर्थ

- वर्षाऋतु, अर्धशीत और गर्मी की मौसम के लिये अनुकुल।
- पाक अवधी ८० से ८५ दिन।
- पौंधे की मध्यम उचाई: ९० से १०० से.मी.।
- पौंधे की शुरु से २-३ लम्बी शाखाए निकलती है।
- शाखा के शुरु से, अलग-अलग एक दूसरे के सामने शाखा की पुरी लंबाई तक डींडवे लगते हैं।
- डींडवे बडे, पकने पर भी दाने बहार निकलते नही हैं।
- दाने का रंग चमकता सफेद होने से बाजार में ज्यादा मांग रहती हैं।
- पुष्पगुच्छ की विकृत्ति (फायलोडी) व कालवण शिर्ष रोग (बेक्टेरीयल ब्लाइट) का प्रमाण बहुत कम आता हैं।
- तेलकी मात्रा ४८ से ५० प्रतिशत रहती हैं।
- दाने बडे चमकीले, १००० दाने का वजन ३१ से ३३ ग्राम।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे।

तील की सभी किस्म के लिए बुआई

- बौनी (बुआई) वर्षा, अर्धशीत और ग्रीष्मऋतु।
- बुआई का अंतर : वर्षाऋतु ४५ X २५ से.मी.।

  अर्धशीत, ग्रीष्म : ६० X २५ से.मी.।
- बीज की मात्रा : प्रति एकड १ किलोग्राम।
- उर्वरक : बुआई के पहले १० : २० : ०० ना.फो.पो. कि.ग्रा. / एकड।
- बुआई के ४५ दिन बाद १० कि.ग्रा. नाईट्रोजन प्रति एकड।

खास मावजत

- तील के दाने बहुत छोटे और हलके होने की वजह से रेत के साथ मिलाकर बुआई करनी जरुरी है ।
- बुआई के २०-२५ दिन बाद एक हार मे दो पौंधे के बीज १५ से.मी. अंतर रख्र के अतिरिक्त पौंधे अवश्य उख्राडे।
- बीज की बुआई कम गहराई पर करे।
- बीज की बुआई के पहले थायरम और केप्टान, २-३ ग्राम प्रति किलो बीज मावजत अवश्य दे।
- फुल और डींडवे आने के समय जमीन में नमी की कमी न होने दे।

पौधे लगाये बारीश लाये ।

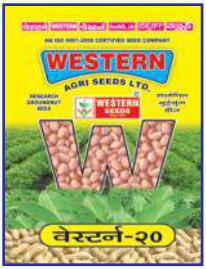

रीसर्च मुँगफली

वेस्टर्न-२०

- वर्जीनीया अर्ध फैलनेवाली किस्म, बारीश और ग्रीष्म ऋतु के लिये उपयुक्त।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म :-
  बारीश : ११०-११५ दिन, ग्रीष्म ११५-१२० दिन
- पौधा मध्यम उंचा, फैलनेवाली, १०-१२ फलाउ डाली।
- फली पूरे पौधे पे आती है और फली मध्यम लंबी होती है।
- फली का छीलका (कवच) मध्यम जाडाई का और दाने की उपज ६७-७० प्रतिशत आती है।
- दाना बड़ा गोल होता है।
- तेल की मात्रा ५१-५३ प्रतिशत।
- दाने की लंबी सुषुप्तावस्था आनुवंशिक है।
- टीक्का, बडनेक्रोसीस रोग और अर्धसूख्रा परिस्थिति में प्रतिकारक है।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न-४४

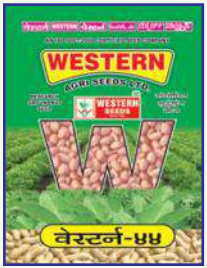

- गुच्छेवाली (स्पेनीश बन्च) उभडी किस्म होने से सभी ऋतु, बारीश, अर्धशीत व ग्रीष्म ऋतु में बोयी जा सकती है।
- मध्यम देरी से पकने वाली : बारीश की ऋतु में १०५ से ११० दिन और गर्मी की ऋतु में ११० से ११५ दिन।
- पौंधा मध्यम उंचाई का और १०-१२ फलाउ शाखाए आती है।
- फली झुमखे (गुच्छे) में आती है, पौंधे पे फली एक साथ पकती है। फली में २-३ मध्यम कद के दाने आते है।
- फली का कवच (छीलका) पतला होने से दाने की उपज ७२ से ७४ प्रतिशत रहती है।
- तेल की मात्रा ४८ से ५० प्रतिशत रहती है।
- सुषुप्तावस्था का आनुवंशिक गुणधर्म है।
- दाने का कद छोटा होता है।
- टीक्का, स्ट्रीप वायरस और गेरु रोग प्रतिकारक है।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न-५१

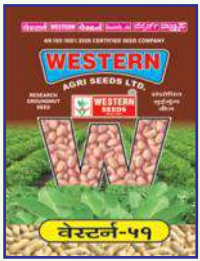

- गुच्छेवाली (स्पेनीश बन्च) उभडी किस्म होने से सभी ऋतु, बारीश, अर्धशीत व ग्रीष्म ऋतु के लिए अनुकूल है।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म : बारीश की ऋतु में १०५ से ११० दिन और गर्मी की ऋतु में ११० से ११५ दिन।
- पौंधा सीधा मध्यम उंचाई का और अधिक फलाउ शाख्राए आती है।
- फली झुमख्रे (गुच्छे) में आती है, फली बडी व एक फली में २-३ बड़े कद के दाने आते है।
- फली कोमल और चमकदार रहती है।
- फली का कवच (छीलका) पतला होने से ७० प्रतिशत से ज्यादा दाने की उपज आती है।
- दाने बड़े और आकर्षक होने से निर्यात के लिए अनुकुल, दाने के बजार भाव ज्यादा मिलता है।
- तेल की मात्रा ४९ से ५१ प्रतिशत रहती है।
- पकने के बाद दाने का स्फुरण पौंधे पे फली में होता नहीं है।
- टीक्का और बडनेक्रोसीस रोग के सामने प्रतिकारक है।

रासयणीक खाद्य का जरुरत मुताबिक उपयोग करे

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न एच.बी.-५५

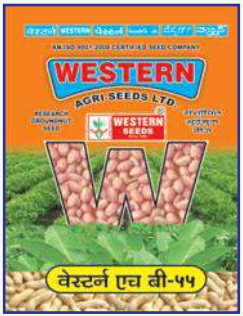

- गुच्छेवाली (स्पेनीश बन्च) उभडी किस्म होने से बारीश और ग्रीष्म ऋतु में बोयी जा सकती है।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म : बारीश की ऋतु में १०५ से ११० दिन और ग्रीष्म ऋतु में १२० से १२५ दिन
- पौंधा मध्यम उंचाई और १२-१५ फलाउ शाखाए आती है।
- फली (झुमखे) गुच्छे में आती है और एकसाथ विकसीत होती है।
- फली का कवच (छीलका) मध्यम होता है, दाने की उपज ६७ से ७० प्रतिशत होती है, दाने का कद मध्यम।
- तेल की मात्रा ४६ से ४८ प्रतिशत।
- दाने की सुषुप्तावस्था आनुवंशिक गुण है।
- टीक्का और बडनेक्रोसीस रोग के सामने प्रतिकारक है।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न वरदान

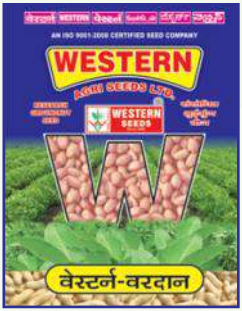

- स्पेनीश बन्च (गुच्छेवाली) उभडी किस्म होने से बारीश, अर्धशीत और ग्रीष्म ऋतु के लिये उपयुक्त।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म : बारिश की ऋतु में १०५ से ११०, अर्धशीत ऋतु में १२०-१२५ और ग्रीष्म ऋतु में ११०-११५ दिन।
- पौधा मध्यम उंचाई का और १०-१२ फलाउ शाखाए आती है।
- फली झुमखे में आती है और एक साथ विकसीत होती है।
- फली का छीलका (कवच) मध्यम होता है, दाने की उपज ७०-७२ प्रतिशत।
- दाने का कद मध्यम।
- तेल की मात्रा ५१-५३ प्रतिशत।
- दाने की सुषुप्तावस्था कम **(Short Duration Dormancy)**।
- टीक्का और बडनेक्रोसीस रोग के सामने प्रतिकारक है।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न महाबली

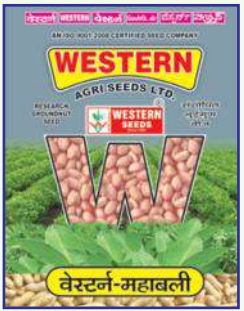

- गुच्छेवाली (स्पेनीश बन्च) उभडी किस्म होने से बारीश, अर्धशीत और ग्रीष्म ऋतु में बोने के लिये उपयुक्त।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म :
  - बारीश की ऋतु : १०५-११० दिन
  - अर्धशीत : १२०-१२५ दिन
  - ग्रीष्म : ११०-११५ दिन
- पौधा मध्यम उंचाई का और १०-१२ फलाउ शाखाए आती है।
- फली झुमख्रे (गुच्छे) में आती है और एक साथ विकसित होती है।
- फली का छीलका (कवच) पतला होता है, दाने की उपज ७२ से ७४ प्रतिशत होती है।
- तेलकी मात्रा ४९ से ५० प्रतिशत।
- दाने की सुषुप्तावस्था आनुवंशिक गुण है।
- टीक्का, बडनेक्रोसीस और गेरु रोग के सामने प्रतिकारक है।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न-१८

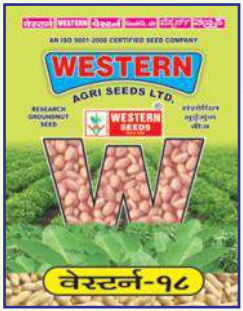

- जल्द बुआई के लिये उपयुक्त किस्म।
- ११०-११५ दिन में पकनेवाली किस्म है।
- यह किस्म फैलनेवाली डाली वाली है।
- ग्रीष्म और बारीश मौसम के लिये उपयुक्त।
- बडे पत्तेवाली मध्यम हरा रंग की किस्म।
- रोग और किटाणु के सामने प्रतिकारक है।
- तेलकी मात्रा ४९.५ प्रतिशत।
- दाने की सुषुप्तावस्था २५-३० दिन।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न-६६

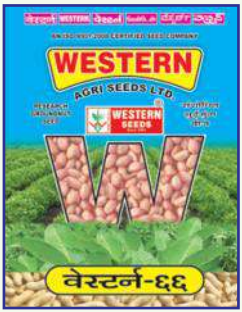

- गुच्छेवाली (स्पेनीश बन्च) वेलडी किस्म होने से बारीश, अर्धशीत और ग्रीष्म ऋतु में बोयी जा शकती है।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म :
  - बारीश की ऋतु : १०५-११० दिन
  - अर्धशीत : १२०-१२५ दिन
  - ग्रीष्म : ११०-११५ दिन
- पौधा मध्यम उंचाई का और १२-१५ फलाउ शाखाए आती है।
- फली झुमखे (गुच्छे) में आती है और एक साथ विकसित होती है।
- फली का छीलका (कवच) पतला होता है, दाना बडा, दाने की उपज ७२ से ७४ प्रतिशत होती है।
- तेलकी मात्रा ४९ से ५१ प्रतिशत।
- दाने की सुषुप्तावस्था आनुवंशिक होती है।
- टीक्का, बडनेक्रोसीस और गेरु रोग के सामने प्रतिकारक है।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न अंबर

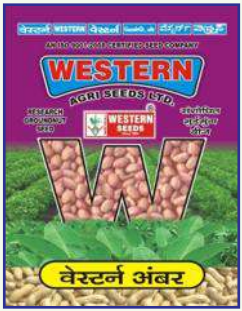

- गुच्छेवाली (स्पेनीश बन्च) उभडी किस्म, बारीश, अर्धशीत और ग्रीष्म ऋतु के लिये उपयुक्त।
- पौंधा खडा, डालीयां लम्बी और खडी रहती है। डालीयो की संख्या ८-१०।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म :
  - बारीश की ऋतु : ११०-११५ दिन
  - अर्धशीत : १२०-१२५ दिन
  - ग्रीष्म : ११५-१२० दिन
- फली झुमखे (गुच्छे) में आती है, सभी फली एक साथ विकसीत होती है।
- फली का छीलका (कवच) पतला होता है, दाने की उपज ६७ से ७० प्रतिशत होती है। दाना बडा और आकर्षक होता है।
- तेलकी मात्रा ५२ से ५५ प्रतिशत।
- दाने की कम समय की सुषुप्तावस्था आनुवंशिक गुण है।
- टीक्का, बडनेक्रोसीस और गेरु रोग के सामने प्रतिकारक है।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न धमाका

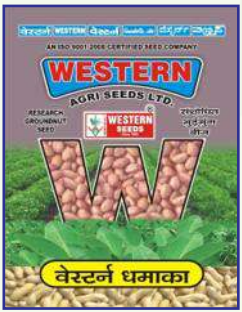

- गुच्छेवाली (स्पेनीश बन्च) उभडी किस्म, बारीश, अर्धशीत और ग्रीष्म ऋतु में लिये उपयुक्त।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म :
  - बारीश की ऋतु : १०५-११० दिन
  - अर्धशीत : १२०-१२५ दिन
  - ग्रीष्म : ११०-११५ दिन
- पौधा मध्यम उंचा, थोडा फैलनेवाला और १२-१५ फलाउ शाखाए आती है।
- फली झुमखे में आती है और फली की लंबाई थोडी ज्यादा।
- फली का कवच (छीलका) मध्यम होता है, दाने की उपज ६७ से ७० प्रतिशत रहती है।
- दाना थोडा बडा मध्यम कद का।
- तेलकी मात्रा ५१ से ५३ प्रतिशत।
- दाने की सुषुप्तावस्था आनुवंशिक होती है।
- टीक्का, बडनेक्रोसीस और गेरु रोग के सामने प्रतिकारक है।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे।

रीसर्च मुँगफली वेस्टर्न जी.जी. 22

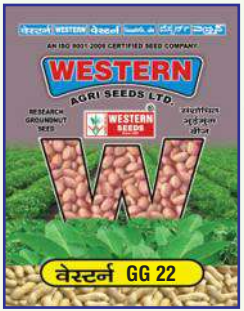

- गुच्छेवाली किस्म, बारीश, अर्धशीत और ग्रीष्म ऋतुमें अनुकुल।
- पक्व काल १०५ से ११० दिन।
- दाने का रंग गुलाबी, १०० दाने का वजन ४० से ४५ ग्राम।
- फली और दाने का प्रमाण (उतारा) ७२-७४%।
- टीक्का, बडनेक्रोसीस और गेरु रोग के सामने प्रतिकारक है।

पौधे लगाये बारीश लाये।

मुंगफली की खेती पद्धति

- बुआई : बारीश ऋतु : जुन-२० से जुलाई-१०।
  ग्रीष्म ऋतु : जनवरी का प्रथम पखवाडा।

	बुआई का अंतर	बीज की मात्रा (कि.ग्रा./एकर)
वेस्टर्न-२०	४५ X १५ से.मी.	४०
वेस्टर्न अम्बर	२५ X १० से.मी.	५०
वेस्टर्न माका वेस्टर्न-५१ वेस्टर्न एच.बी. ५५ वेस्टर्न महाबली वेस्टर्न ६६ वेस्टर्न धमाका वेस्टर्न वरदान वेस्टर्न वंदना वेस्टर्न -४४ वेस्टर्न-१८ वेस्टर्न-२२	३० X १० से.मी.	४५

- उर्वरक : सेन्द्रिय खाध : ०२ टन प्रति एकड।
- रासायणिक खाध : ०४:१०:०८ ना.फो.पो. कि.ग्रा./एकड।
- गंधक ०४ कि.ग्रा./एकड, जसत और लोह प्रत्येक ६ कि.ग्रा. प्रति एकड।
- सभी उर्वरक बुआई के पहले जमीन में दिजीये।
- सिंचाई : फुल आने के समय और फली विकसीत होने के समय जमीन में नमी की कमी न होने दे।

खास मावजत

- मूंगफली के दाने बहुत नाजुक होते है, बुआई के पहले व बुआई के समय संभलकर इस्तेमाल करे।
- मूंगफली के बीज व छोटे पौधे की जमीन में पानी भराव स्थिति प्रतिकारक शक्ति कम होती है, खेत में बरसाती पानी का निकाल अवश्य करे।
- मूंगफली के खेत में पानी भराव होने से या अधिक दिन बारीश की स्थिती हो तो पौधे पर फूग आने की संभावना होती है । ट्रायकोडर्मा जैविक फूगनाशक व रासायणिक फुगनाशक का उपयोग करे।
- मूंगफली का पौधा गौणतत्व, खास करके जसत और लोह की कमी जल्दी महसूस करता है, अैसी परिस्थिति में गौणतत्व का छंटकाव अवस्य करे।

हा.एरण्डी

वेस्टर्न-६+

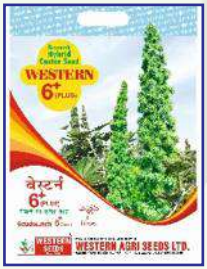

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित व असिंचित क्षेत्र के लिए अनुकुल है।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म, पाक अवधि १८० से २२० दिन है।
- पौंधा मध्यम उंचाई (१००-१०५ से.मी) का और पौंधे पे १६ से १८ लम्बी लूम आती है।
- पौंधे का रंग हरा और त्रिस्तरीय झांख (Triple Bloom) : पौंधे के थड शाखाए व पत्तो के उपर नीचे सफेद झांख होने से रस चूसक किटको का उपद्रव बहुत कम रहता है।
- पहली लूम ४५ से ५० दिन पे आती है और कटाई १२० से १३० दिन पे होती है।
- लूम लम्बी, भरावदार और डोडवे कांटे वाले बड़े होते है।
- डोंडवे पे ज्यादा कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव कम रहता है।
- दाने मध्यम कद के, १०० दाने का वजन सरेराश ३० से ३२ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा सरेराश ५० प्रतिशत होती है।
- यह किस्म उगसुक (Wilt) रोग के प्रतिकारक शक्ति रखती है।

रासयणीक खाद्य का जरुरत मुताबिक उपयोग करे

हा.एरण्डी

वेस्टर्न-६

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित व असिंचित क्षेत्र के लिए अनुकुल है।
- जल्द पकने वाली किस्म, पाक अवधि १६० से १९० दिन है।
- पौंधे की मध्यम उंचाई (१००-१०५ से.मी.)
- पौंधे का रंग हरा और त्रिस्तरीय झांख (Triple Bloom), पौंधे के थड शाखाए व पत्ते के उपर नीचे सफेद झांख होने से रस चूसक किटको का उपद्रव बहुत कम रहेता है।
- पहली लूम ४० से ४५ दिन पे और कटाई १०० से १०५ दिन पे होती है।
- डोंडवे पे ज्यादा कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव कम रहता है।
- दाने मध्यम कद के, १०० दाने का सरेराश वजन २८-३० ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा सरेराश ५०प्रतिशत होती है।
- यह किस्म उगसुक (Wilt) रोग के प्रति अंशत: प्रति कारक शक्ति रखती है।

जल ही जीवन है, इसका मूल्य समझे ।

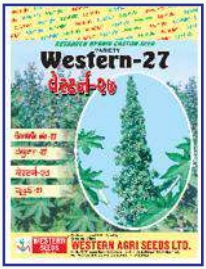

हा.एरण्डी

वेस्टर्न - २७

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित क्षेत्र के लिए अनुकुल।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म, पाक अवधि १८० से २२० दिन है।
- पौंधा मध्यम उंचाई (१००-१०५ से.मी.) का और पौंधे पे २० से २२ लंम्बी लूम आती है।
- पौंधे का रंग मेहागोनी है और द्वि-स्तरीय झांख्र (Double Bloom) : पौंधे के थड - शाख्राए एवं पत्ते के नीचे सफेद झांख्र होने से रस चूसक किटको का उपद्रव कम रहता है।
- पहली लुम ४० से ४५ दिन पे आती है और कटाई १३० से १४० दिन पे होती है।
- लुम लम्बी, भरावदार और डोंडवे कम कांटेवाले मध्यम कद के होते है।
- डोंडवे पे कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव अंशत : कम रहता है।
- दाने बड़े, १०० दाने का सरेराश वजन ३५-३७ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा सरेराश ४८ प्रतिशत रहती है।
- यह किस्म उगसुक (WILT) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रख्रती है।

हा.एरण्डी

वेस्टर्न वी.जे.- ६६ +

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित व असिंचित क्षेत्र के लिए अनुकुल।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म, पाक अवधी १९० से २२० दिन है।
- पौंधे मध्यम उंचाई (११०-११५ से.मी.) के और पौंधे पे १८ से २० लम्बी लूम आती है।
- पौंधे का रंग मेहागोनी और द्वि-स्तरीय झांख : पौंधे के थड-शाखाए व पत्ते के नीचे सफेद झांख होने से रस चुसक किटक का उपद्रव कम रहता है।
- पहली लूम ४५ से ५० दिन पे आती हैं और कटाई ११५ से १२५ दिन पे आती है।
- लूम बहुत लंबी, भरावदार और डोंडवे कांटेवाले बड़े होते है।
- डोंडवे पे ज्यादा कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव कम रहता है।
- दाने मध्यम कद के, १०० दाने का वजन सरेराश ३५-३७ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा ५० से ५२ प्रतिशत रहती है।
- यह किस्म उगसुक (WILT) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रखती है।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे।

हा.एरण्डी

वेस्टर्न वी.जे.- ६६

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित व आंशिक सिंचित क्षेत्र के लिए अनुकुल है।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म, पाक अवधी १८० से २१० दिन।
- पौंधे मध्यम उंचाई (११०-११५ से.मी.) का और पौंधे पे १८ से २० लम्बी लूम आती है।
- पौंधे का रंग मेहागोनी और द्वि-स्तरीय झांख : पौंधे के थड-डाली व पत्ते के नीचे सफेद झांख होने से रस चुसक किटक का उपद्रव कम आता है।
- पहली लुम ४० से ४५ दिन पे आती हैं और कटाई ११० से १२० दिन पे आती है।
- लूम बहुत लंबी, भरावदार और डोंडवे कांटेवाले बड़े होते है।
- डोंडवे पे ज्यादा कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव कम रहता है।
- दाने मध्यम कद के १०० दाने का वजन सरेराश ३५-३७ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा ४८ से ५० प्रतिशत रहती है।
- यह किस्म उगसुक (WILT) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रखती है।

वेस्टर्न सीड्स, अपना सीड्स ।

हा.एरण्डी

वेस्टर्न मारुति

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित और आंशिक सिंचित क्षेत्र के लिए अनुकुल।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म, पाक अवधी १८० से २२० दिन है।
- पौंधा १४५-१५० से.मी. उंचाई का और पौंधे पे २८ से ३० मध्यम लम्बी लूम आती है।
- पौंधे का रंग मेहागोनी और त्रि-स्तरीय झांख(Triple Bloom) : पौंधे के थड-शाखाए व पत्ते के नीचे व उपर सफेद झांख होने से रस चुसक किटक का उपद्रव बहुत कम रहता है।
- पहली लूम ४० से ५० दिन पे आती हैं और कटाई १२५ से १३५ दिन पे होती है।
- लूम मध्यम लम्बी और डोंडवे आंशिक कांटेवाले मध्यम कद के होते है।
- डोंडवे पे आंशिक कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव अंशत : कम रहता है।
- दाने मध्यम कद के, १०० दाने का सरेराश वजन ३२-३४ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा ५० से ५२ प्रतिशत रहती है।
- यह किस्म ज्यादा उत्पादन देनेवाली और उगसुक (Wilt) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रखती है।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

हा.एरण्डी

वेस्टर्न अेवोर्ड

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित और आंशिक सिंचित क्षेत्र के लिए अनुकुल है।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म, पाक अवधी १८० से २१० दिन है।
- पौंधा मध्यम उंचाई (११०-११५ से.मी.) का और पौंधे पे १६ से १८ मध्यम लम्बाई की लूम आती है।
- पौंधे का रंग मेहागोनी और त्रि-स्तरीय झांख(Triple Bloom) : पौंधे के थड, शाखाए व पत्ते के उपर-नीचे सफेद झांख होने से रस चुसक किटक का उपद्रव कम रहता है।
- पहली लूम ५० से ५५ दिन पे आती हैं और कटाई १२० से १३० दिन पे आती है।
- लूम मध्यम लम्बी, भरावदार और डोंडवे कांटेवाले मध्यम कद के होते है।
- डोंडवे में ज्यादा कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव कम रहता है।
- दाने मध्यम कद के, १०० दाने का वजन सरेराश ३०-३२ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा ५० से ५२ प्रतिशत रहती है।
- यह किस्म उगसुक (Wilt) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रखती है।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे।

हा.एरण्डी

वेस्टर्न मुरवी

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित क्षेत्र के लिये अनुकुल है।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म, पाक अवधी १९० से २२० दिन है।
- पौंधा १३०-१३५ से.मी. उंचाई का और पौंधे पे १६ से १८ मध्यम लम्बाई की लूम आती है।
- पौंधे का रंग मेहागोनी और त्रि-स्तरीय झांख (Triple Bloom) : पौंधे के थड-शाखाए व पत्ते के उपर-नीचे सफेद झांख होने से रस चुसक किटक का उपद्रव बहुत कम आता है।
- पहली लूम ५० से ५५ दिन पे आती हैं और कटाई १२० से १३० दिन पे आती है।
- लूम मध्यम लम्बी, भरावदार और डोंडवे कांटेवाले मध्यम कद के होते है।
- डोंडवे पे ज्यादा कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव कम रहता है।
- दाने मध्यम कद के, १०० दाने का वजन सरेराश ३०-३२ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा ५० से ५२ प्रतिशत रहती है।
- यह किस्म उगसुक (Wilt) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रखती है।

पौधे लगाये बारीश लाये ।

हा.एरण्डी

वेस्टर्न सरपंच

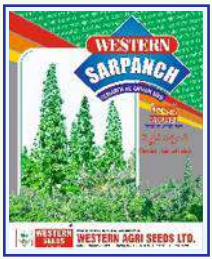

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित और आंशिक सिंचित क्षेत्र के लिये अनुकुल है।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म, पाक अवधी १९० से २२० दिन है।
- पौंधा मध्यम उंचाई (१००-१०५ से.मी.) का और पौंधे पे २० से २२ लम्बी लूम आती है।
- पौंधे का रंग हरा और द्वि-स्तरीय (Double Bloom) : पौंधे के थड-शाखाए व पत्ते के नीचे सफेद झांख होने से रस चुसक किटक का उपद्रव अंशत: कम रहता है।
- पहली लूम ५० से ५५ दिन पे आती हैं और कटाई १३० से १४० दिन पे आती है।
- लूम बहुत लम्बी, भरावदार और डोंडवे कांटेवाले बडे कद के होते है।
- डोंडवे पे ज्यादा कांटे होने से डोडवे की ईल्ली का उपद्रव बहुत कम रहता है।
- दाने बडे कद के, १०० दाने का वजन सरेराश ४०-४२ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा ५० से ५२ प्रतिशत रहती है।
- यह किस्म सबसे ज्यादा उत्पादन देनेवाली और उगसुक (Wilt) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रखती है।

हा.एरण्डी

वेस्टर्न जेष्ठा

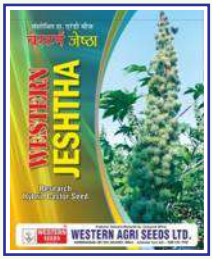

- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, सिंचित और असिंचित क्षेत्र के लिये अनुकुल।
- जल्दी से पकनेवाली किस्म, पाक अवधी १६० से १८० दिन।
- पौंधा कम उंचाई (९५-१०० से.मी.) का और पौंधे पे १८ से २० मध्यम लम्बी लूम आती है।
- पौंधे का रंग मेहागोनी और द्वि-स्तरीय झांख (Double Bloom) : पौंधे के थड-शाखाए व पत्ते के नीचे सफेद झांख होने से रस चूसक किटको का उपद्रव कम रहता है।
- पहली लूम ५० से ५५ दिन पे आती हैं और कटाई ११० से १२० दिन पे आती है।
- लूम मध्यम लम्बी भरावदार और डोंडवे कांटेवाले मध्यम कद के होते है।
- डोंडवे पे ज्यादा कांटे होने से डोंडवे की ईल्ली का उपद्रव कम रहता है।
- दाने मध्यम कद के, १०० दाने का वजन सरेराश ३४-३६ ग्राम होता है।
- तेल की मात्रा ५० प्रतिशत रहती है।
- यह किस्म उगसुक (Wilt) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रखती है।

एरण्डी की खेती पद्धति

- वेस्टर्न-६, वेस्टर्न-६+ और वेस्टर्न जेष्ठा बीन सिंचित बुआई के लिये भी अनुकुल है।
- एरण्डी की सभी किस्म सिंचित बुआई के लिये उपयुक्त है।
- बुआई का समय : बीन सिंचित एरण्डी की बुआई जुलाई माह में करे।
  सिंचित एरण्डी की बुआई १५ अगस्त के बाद करे।
- बुआई अंतर : बीन सिंचित एरण्डी की बुआई १२० X ६० से.मी. अंतर पर करे।
  सिंचित एरण्डी की बुआई १५० X ९० से.मी. अंतर पर करे।
- बीज की मात्रा : बीन सिंचित एरण्डी प्रति एकड ४-५ किलो बीज जरुरी है।
  सिंचित एरण्डी प्रति एकड ३-४ किलो बीज जरुरी है।
- उर्वरक : सेन्द्रिय खाद : ४-५ टन प्रति एकड।
  रासायणिक खाद : (किलोग्राम प्रति एकड)।
  बीन सिंचित : १६:१६:०० ना.फो.पो.।
  सिंचित : ७५:५०:०० ना.फो.पो.।

खास मावजत

- एरण्डी की बुआई समय से पहले न करे।
- एरण्डी की फसल को ज्यादा मात्रा में नाईट्रोजन न दे।
- एरण्डी की फसल को सिंचाई ज्यादा न करे, फूल और डोंडवे आने के समय नमी की कमी न होने दे।

जल ही जीवन है, इसका मूल्य समझे ।

संशोधित जीरा

वेस्टर्न सी.४५

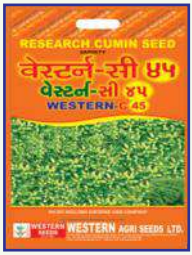

- यह किस्म के पौंधे पे ४५ दिनों के बाद ५० प्रतिशत फुल आते है।
- अंदाजन ९५ से १०० दिनों में पकनेवाली किस्म है।
- यह किस्म का बीज उच्च गुणवत्ता वाला होने से और ईमीडाक्लोप्रीड से आवरीत होने से बीज की जरुरत कम रहती है, जिससे खर्च कम होता है।
- रस चूसक कीटक के सामने प्रतिकारक है।
- अन्य किस्मो के मुकाबले पौधा का सुखने के रोग (Wilt) के प्रति ज्यादा प्रतिकारक शक्ति रखता है।
- अधिक डाली एवं अधिक फुल चक्कर लगने से पैदावार ज्यादा मिलती है।
- पौधे के थड में से निकलती, फैलने वाली डालीयाँ, दाने मध्यम मोटे और लम्बे।
- अधिक सुगंधित तेल होने से बाजार में अधिक दाम मिलते है, और निर्यात के लिए ज्यादा माँग रहती है।

संशोधित जीरा

वेस्टर्न-सी.६०

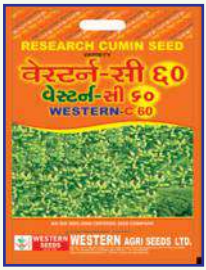

- यह किस्म के पौंधे पे ६० दिनों के बाद ५० प्रतिशत फुल आते है।
- अंदाजन १०० से १०५ दिनों मे पकनेवाली किस्म।
- सीधी वृद्धि करने वाला मध्यम उंचाई का पौंधा।
- सीधी निकलने वाली लंबी और ज्यादा प्रशाखाएं।
- दाने मध्यम मोटे व लंबे।
- अन्य किस्मो के मुकाबले पौधे का सूखने रोग (Wilt) के प्रति ज्यादा प्रतिकारक शक्ति रखता है।
- पेस्टीसाईड कोटेड होने से जमीन मे रहनेवाले किटक एवं पौंधे रस चूसक कीटक के सामने प्रतिकारक है।
- यह किस्म के पौंधे में डाली एवं पेटा डालीओं की मात्रा ज्यादा होने से पैदावार ज्यादा मिलती है।
- यह किस्म का बीज उच्च गुणवत्ता वाला होने से और ईमीडाक्लोप्रीड से आवरीत होने से बीज की जरुरत कम रहती है, जिससे खर्च कम होता है।
- अधिक सुगंधित तेल होने से निर्यात के लिए ज्यादा माँग रहती है।

नोट : जब तापमान ३० से.ग्रे. से कम हो तब ही जीरे की बुआई करनी चाहिए

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे।

जीरा की खेती पद्धति

बुआई : नवम्बर प्रथम पखवाडा ।

- बुआई अंतर : ३० से.मी. ।
- बीज की मात्रा : ४-५ कि.ग्रा. प्रति एकड ।
- उर्वरक : बुआई के वख्त ना.फो.पो. ६:६:० किलो ग्राम प्रति एकड ।
  बुआई के बाद ३० दिन : ६ कि.ग्रा. नाईट्रोजन प्रति एकड ।

खास मावजत :

- बुआई के पहले बीज को ८-१० घंटे गीले रखने के बाद छांव में सुखाकर थायरम का पट दिजीए ।
- बादल वाले वातावरण के समय सिंचाई मत करे ।
- ४५ दिनो तक जीरा को निंदणमुक्त रखे ।
- क्यारा की लंबाई और चौडाई कम रखे ।
- बीज के उगने के बाद फूल आने तक पियत न करे ।
- चास उत्तर दक्षिण दिशा में और जमीन के ढोलाव की दिशामें रखे ।
- जीरा की बुआई गेहुं, राय और रजका के फसल के नजदीक न करे ।
- जब तापमान ३० से.ग्रे. से कम तब ही जीरे की बुआई करे ।

संशोधित सरसों (रायडा)

वेस्टर्न-वीर

- पियत और बीन पियत फसल के लिए उचित।
- यह किस्म १०५ से ११० दिन में पक जाती है।
- यह किस्म के पौधे पे १० से १२ मुख्य शाखाए और २३ से २५ प्रशाखाए आती है।
- दाने बडे, १००० दाने वजन ५.५ से ६ ग्राम, भूरे जैसे काले रंग के होते है।
- पौंधे की फलिया बडी लम्बी और एक साथ पकती है।
- जमीन के प्रकार के अनुसार पौधे की उंचाई सरेराश १४० से.मी. रहती है।
- बीज में तेल की मात्रा ४० से ४२ प्रतिशत होती है।
- अन्य किस्मो के मुकाबले ज्यादा पैदावार देती है।
- फलीया पकने पर झडती नही।
- अल्टरनेरीया, सफेद रतुआ तथा डाउनी मिलड्यु रोग के सामने मध्यम प्रतिरोधकता।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

संशोधित सरसों (रायडा)

वेस्टर्न-शारदा

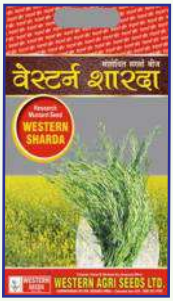

- पियत और बीन पियत फसल के लिए उपयुक्त।
- यह किस्म का पक्व काल १०५ से ११० दिन।
- पौधा मध्यम उंचाई (११०-१२० से.मी.) का और पौधे पे १२-१५ मुख्य शाखाए नीचे से नीकलती है। जीसकी वजह से फली पकने के बाद भी पौधा सीधा खडा रहता है, पौधे से काफी मात्रा में २५ से ३५ प्रशाखाए निकलती है।
- पौंधे पर फलिया एक साथ पकती है तथा फली सुखने पर दाने झडते नहीं।
- फली मध्यम लंबाई की और भरावदार होती है।
- दाने बडे, १००० दाने का वजन ५.५ से ६ ग्राम, मध्यम काले रंग के होते है।
- दाने में तेल की मात्रा ४२-४५ प्रतिशत होती है।
- अल्टरनेरीया, सफेद रतुआ तथा डाउनी मिलड्यु रोग प्रतिरोधकता।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे।

संशोधित सरसों (रायडा)

वेस्टर्न कर्मवीर

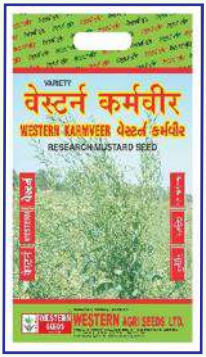

- पियत और बीन पियत फसल के लिए उचित।
- जल्द पकने वाली किस्म, ८० से ९० दिन।
- कम उंचाई (९०-१०० से.मी.), लम्बी १५ से १८ शाखाए और २५ से ३० प्रशाखाए।
- पौंधे पर फलिया एक साथ पकती है।
- फसल पकने बाद फलि में से दाने झडते नही।
- दाना ज्यादा बड़ा : १००० बीज का वजन ६.५ से ७ ग्राम।
- तेल की मात्रा ४५ - ४८ प्रतिशत।
- अल्टरनेरीया, सफेद स्तुआ तथा डाउनीमिल्यु रोग प्रतिरोधकता।

पौधे लगाये बारीश लाये।

संशोधित सरसों (रायडा)

वेस्टर्न जयवीर

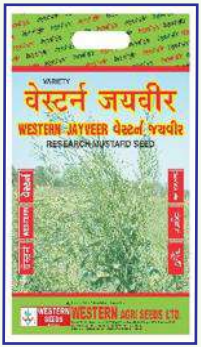

- पियत और बीन पियत फसल के लिए उचित।
- मध्यम उंचाई (१२० से १३० से.मी.), लम्बी घनी शाखाए और प्रशास्वाए।
- मध्यम देरी से पकने वाली किस्म, ९० से ९५ दिन।
- पौंधे पर फलिया एक साथ पकती है।
- फसल पकने के बाद फलियेमेंसे दाने खरते नही।
- दाना छोटा : १००० बीज का वजन ३.५ से ४ ग्राम।
- तेल की मात्रा ४२ - ४५ प्रतिशत।
- अल्टरनेरीया, सफेद स्तुआ तथा डाउनीमिल्यु रोग प्रति मध्यम प्रतिरोधकता।

सरसौं (रायडा) की खेती पद्धति

बुआई :

- बुआई समय : १ ओक्टोबर से ३१ ओक्टोबर।
- बुआई अंतर : बीन पियत ४५ **X** १५ से.मी. और पियत ६० X २० से.मी.
- बीज की मात्रा : बीन पियत २.५ से ३.० कि.ग्रा.।
  पियत १.५ से २.० कि.ग्रा. प्रति एकड।

खास मावजत :

- बुआई के पहले बीज को ८-१० घंटे गीले रखने के बाद छांव में सुखाकर थायरम का पट दिजीए।
- सरसौं की समयसर बुआई किजीए, देरी से बुआई करने से सफेद गेरुआ और रसचूसक किटक का उपद्रव बढता है।
- बुआई के पहले एक एकड में ४५ कि.ग्रा. **D.A.P.** व १० कि.ग्रा. एमोनीयम सल्फेट जमीन में दे।
- फूल कली आने के समय २२ कि.ग्रा. युरिया या ५० कि.ग्रा. एमोनियम सल्फेट एक एकड में दे।
- प्रति एकड ८-१० कि.ग्रा. गंधक बुआई के पहेले जमीन में दे।
- फसल पर समयांतरे मेटासिस्टोक्ष, रोगर, मोनोक्रोटोफोस का छिंटकाव करे।
- फसल की वृद्धि बढने पर पेराथीयोन डस्ट का छिंटकाव करे।

नोंध : बिन पियत फसल की सभी रासायनीक उर्वरक बुआई के पहले दे।

रासयणीक खाद्य का जरुरत मुताबिक उपयोग करे

हा.सरसों (रायडा)

वेस्टर्न यलो गोल्ड

- पियल फसल के लिये उचित।
- देरी से पकनेवाली १२० से १२५ दिन।
- जमीन के प्रकार और मावजत के अनुसार पौंधे की उंचाई औसत १७०-१८० से.मी. रहती है।
- यह किस्म के पौंधे पे १२ से १५ मुख्य शाखाए और २६ से ३० लंबी उपशाखाए आती है।
- पौधे पर फलिया एक साथ पकती है।
- फसल पकने पर फलियां झडती नहीं।
- दाना बडा : १००० बीज का वजन ५.५ से ६ ग्राम, आछे काले चमकीले होते है।
- तेल की मात्रा : ४२-४६ प्रतिशत।
- अल्टरेनीया तथा सफेद रतुआ रोग की मध्यम प्रतिरोधकता।
- मोलो मशी के उपद्रव के बहुत कम आता है।

हा.सरसौं (रायडा) की खेती पद्धति

बुआई :

- बुआई समय : १ ओक्टोबर से ३१ ओक्टोबर।
- बुआई अंतर : पियत ६० X २० से.मी.
- बीज की मात्रा : पियत १.५ से २.० कि.ग्रा. प्रति एकड।

खास मावजत :

- बुआई के पहले बीज को ८-१० घंटे गीले रखने के बाद छांव में सुखाकर थायरम का पट दिजीए।
- राया की समयसर बुआई किजीये, देरी से बुआई करने से रोग और कीटक का उपद्रव बढता है।
- बुआई के पहेले एक एकड में ४५ कि.ग्रा. डी.ए.पी. व १० कि.ग्रा. अेमोनीयम सल्फेट जमीन में दे।
- फूल कली आने के समय २२ कि.ग्रा. युरिया या ५० कि.ग्रा. अेमोनीयम सल्फेट एक एकड में दे।
- प्रति एकड ८-१० कि.ग्रा. गंधक बुआई के पहेले जमीन में दे।
- फसल पर समयांतरे मेटासिस्टोक्ष, रोगर, मोनोक्रोटोफोस का छंटकाव करे।
- फसल की वृध्धि बढने पर पेराथीयोन डस्ट का छंटकाव करे।

नोंध : बिन पियत फसल की सभी रासायनीक उर्वरक बुआई के पहले दे।

रासयणीक खाद्य का जरुरत मुताबिक उपयोग करे

संशोधित मुंग

वेस्टर्न महावीर

- यह किस्म ७० से ७५ दिनो में पकती है ।
- ग्रीष्म और बारीश की ऋतु में बुआई के लिए उपयुक्त ।
- अन्य किस्मो की अपेक्षा में फली लम्बी और बडी होती है ।
- फली एक साथ और गुच्छे में लगती है ।
- दाने बडे होने से दाल की मात्रा ज्यादा मिलती है ।
- १०० दाने का वजन अंदाजन ५.२ ग्राम होता है ।
- बेक्टेरीयल ब्लाईट रोग प्रतिकारक है ।

संशोधित मुंग

वेस्टर्न प्रोटो

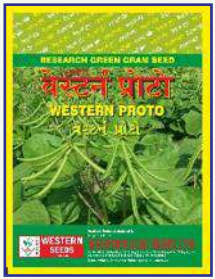

- यह किस्म की फलियां का पक्वकाल : ७० से ७५ दिन।
- ग्रीष्म और बारीश ऋतु में बुआई के लिए उपयुक्त।
- अन्य किस्मो की अपेक्षा में फली मध्यम लंबी और विकसीत होती है।
- फली एक साथे और गुच्छे में लगती है।
- दाने हरे रंग के एवं चमकीले होने से बाजार में ज्यादा दाम मिलता है।
- १०० दाने का वजन अंदाजन ४.५ ग्राम होता है।
- दाने बडे होने से दाल की मात्रा ज्यादा मिलती है।
- पत्ते और पौधे का सुख्रना (मेक्रोफोमीना ब्लाईट) और पिलीया (वायरल यलो मोझेईक) रोगो प्रति प्रतिकारक क्षमता है।

संशोधित मुंग

वेस्टर्न शूरवीर

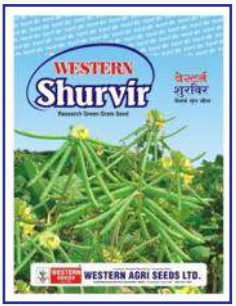

- यह किस्म की फलियो का पक्वकाल : ७० से ७५ दिन।
- ग्रीष्म और बारीश ऋतु में बुआई के लिए उपयुक्त।
- अन्य किस्मो की अपेक्षा में फली लंबी, भरावदार और विकसीत होती है।
- फली एक साथे और गुच्छे में लगती है।
- दाने हरे रंग के एवं चमकीले होने से बाजार में ज्यादा दाम मिलता है।
- १०० दाने का वजन अंदाजन ४.५ ग्राम होता है।
- दाने बडे होने से दाल की मात्रा ज्यादा मिलती है।
- यह किस्म की उंचाई मर्यादित रहती है।
- पत्ते और पौधे का सुख्रना (मेक्रोफोमीना ब्लाईट) और पिलीया (वायरल यलो मोझेईक) रोगो के प्रति प्रतिकारक है।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे।

संशोधित मुंग

वेस्टर्न विराट

- यह किस्म की फलियो का पक्वकाल : ७५ से ८० दिन।
- ग्रीष्म और बारीश ऋतु में बुआई के लिए उपयुक्त।
- अन्य किस्मो की अपेक्षा में फली मध्यम लंबी और विकसीत होती है।
- फली एक साथे और गुच्छे में लगती है।
- दाने गहरे रंग के एवं चमकीले होने से बाजार में ज्यादा दाम मिलता है।
- १०० दाने का वजन अंदाजन ५.० ग्राम होता है।
- दाने बडे होने से दाल की मात्रा ज्यादा मिलती है।
- पत्ते और पौधे का सुखना (मेक्रोफोमीना ब्लाईट) और पिलीया (वायरल यलो मोझेईक) रोगो के प्रति प्रतिकारक है।

वेस्टर्न सीड्स, अपना सीड्स।

मुंग की खेती पद्धति

- बुआई : बारीश और ग्रीष्म ऋतु।
- बुआई अंतर : ३० से.मी. X १० से.मी.।
- बीज की मात्रा : ६ से ८ किलोग्राम प्रति एकड।
- उर्वरक : ०८:१६:०० ना.फो.पो. कि.ग्रा. प्रति एकड।

खास मावजत

- बीज को राईझोबीयम कल्चर का पट अवश्य दे।
- ६ कि.ग्रा. झींक सल्फेट और फेरस सल्फेट प्रति एकड देने से दाने की उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार आता है।
- चुसनेवाले कीटक से बचने के लिये सीस्टेमेटीक कीटनाशक का समयांतरे छंटकाव करे।
- फूल आने के समय मोनोक्रोटोफोस, क्लारोपायरीफोस और प्रोफेनोफोस कीटनाशक छंटकाव करे।
- ज्यादा नाईट्रोजन न दे, ज्यादा पियत न करे।
- ग्रीष्म ऋतु में मुंग की बुआई देरी से न करे।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

संशोधित उरीद

वेस्टर्न अमूल

- यह किस्म का पौधे की अर्धनियंत्रित वृध्धि, मध्यम उंचाई (६०-८० से.मी.) और अर्ध फैलनावाला।
- पाक अवधि : ८० से ९० दिन (फली पकने तक)
- यह किस्म की बारीश और ग्रीष्म ऋतु में बुआई कर सकते है।
- पौधे की उंचाई मध्यम ६० से ८० से.मी., ३-४ मुख्य शाखाए सीधी बढती है।
- फली मध्यम लंबी, भरावदार और भूरे काले रंग की।
- पौधे पे फली एक साथ पकती है और सुख्रने पर पौधे पे फटती नही।
- बारीश की वजह से पौधा और फली को कम नुकशान होता है।
- पिलीया (यलो मोझेक वायरस) रोग प्रति अंशत: प्रतिकार क्षमता है।
- १०० दाने का वजन सरेराश ३.५ से ३.८ ग्राम होता है। बडे दाने होने से दाल की मात्रा ज्यादा मिलती है।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे।

उरीद की खेती पद्धति

- बुआई : बारीश और ग्रीष्म ऋतु के लिये अनुकुल।
- बुआई अंतर : ४५ X १५ से.मी.।
- बीज की मात्रा : ८ किलोग्राम प्रति एकड।
- उर्वरक : ०८:१६:०० ना.फो.पो. कि.ग्रा. प्रति एकड।

खास मावजत

- बीज को राईझोबीयम कल्चर का पट अवश्य दे।
- प्रति एकड ४० कि.ग्रा. डी.ए.पी. बुआई के पहले जमीन में दे।
- प्रति एकड ६ कि.ग्रा. झींक सल्फेट और फेरस सल्फेट बुआई के समय जमीन में दे।
- चुसनेवाले कीटक से बचने के लिये शोषक कीटनाशक का समयांतरे छिंटकाव करे।
- फूल आने के समय मोनोक्रोटोफोस, क्लारोपायरीफोस और प्रोफेनोफोस कीटनाशक का छिंटकाव करे।
- ज्यादा नाईट्रोजन न दे, ज्यादा पियत न करे।

पौधे लगाये बारीश लाये ।

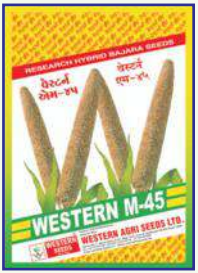

संकर हाईब्रीड बाजरा

वेस्टर्न एम.४५

- खरीफ और ग्रीष्म ऋतु के लिये उपयुक्त किस्म।
- परिपक्वता : खरीफ : ८० से ८५ दिन, ग्रीष्म : ८५ से ९० दिन
- पौंधा : २०० से २२० से.मी. उंचाई
- उत्पादक टिलर (शाखाएं) ४-६, सभी शाखाए के सिट्टे एक साथ पकते है।
- सिट्टा : मध्यम लम्बा : २४-३० से.मी., अच्छी परिधि एवं पूर्ण भराव।
- दाना : मोटा एवं गहरे भूरे रंग का, समान कद और आकार।
- स्टेग्रीन, सिट्टे पकने पर भी पौधा हरा रहता है।
- पशुओं के लिए उत्कृष्ट रसदार, पौष्टिक व स्वादिष्ट हरा-सूखा चारा उपलब्ध होता है।
- डाउनी मिलड्यु एवं दाने का स्मट रोग के प्रति प्रतिकारक।
- कम व अनियमित बारीश की परिस्थिति में खडे रहने की क्षमता।
- ग्रीष्म का ज्यादा तापमान में भी सिट्टे में भरपूर दाने आते है।

खेत का पानी खेत में

संकर हाईब्रीड बाजरा

वेस्टर्न एम.४६

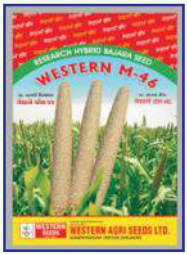

- खरीफ और ग्रीष्म ऋतु के लिये उपयुक्त किस्म।
- परिपक्वता : खरीफ : ७५ से ८५ दिन, ग्रीष्म : ८० से ९० दिन
- पौंधा : १९० से २१० से.मी. उंचाई
- उत्पादक टिलर (शाखाएं) ६-७, सभी शाखाए के सिट्टे एक साथ पकते है।
- सिट्टा : लम्बा : ३०-३२ से.मी., अच्छी परिधि एवं पूर्ण भराव।
- दाना : मोटा, गहरे भूरे रंग का एवं समान कद और आकार वाला।
- स्टेग्रीन, सिट्टे पकने पर भी पौधा हरा रहता है।
- पशुओं के लिए उत्कृष्ट रसदार, पौष्टिक व स्वादिष्ट हरा-सूखा चारा उपलब्ध होता है।
- डाउनी मिलड्यु एवं दाने के स्मट रोग के प्रति प्रतिकारक।
- कम व अनियमित बारीश की परिस्थिति में खडे रहने की क्षमता।
- ग्रीष्म का ज्यादा तापमान में भी सिट्टे में भरपूर दाने आते है।

रासयणीक खाद्य का जरुरत मुताबिक उपयोग करे

संकर बाजरी वेस्टर्न सेवा

- खरीफ और ग्रीष्म ऋतु के लिये उपयुक्त किस्म।
- परिपक्वता : खरीफ : ७७ से ७५ दिन, ग्रीष्म : ८५ से ९० दिन
- पौंधा : १७५ से १८५ से.मी. उंचाई।
- उत्पादक टिलर (शाखाएं) ५-६, सभी शाखाओ के सिट्टे एक साथ पकते है।
- सिट्टा : मध्यम लम्बा : २२-२५ से.मी., अच्छी परिधि एवं पूर्ण भराव।
- दाना : मध्यम कद के, गहरे भूरे रंग का एवं समान कद और आकार।
- स्टेग्रीन, सिट्टे पकने पर भी पौधा हरा रहता है।
- पशुओं के लिए उत्कृष्ट रसदार, पौष्टिक व स्वादिष्ट हरा-सूखा चारा उपलब्ध है।
- डाउनी मिलड्यु एवं दाने के स्मट रोग के प्रति प्रतिकारक।
- कम व अनियमित बारीश की परिस्थिति में खडे रहने की क्षमता।
- ग्रीष्म का ज्यादा तापमान में भी सिट्टे में भरपूर दाने आते है।

बाजरा के लिए खेती पद्धति

- बुआई का समय : खरीफ : जुन - जुलाई।
  ग्रीष्म : फरवरी।
- बुआई अंतर : ४५ X १५ - २० से.मी.।
- बीज की मात्रा : १.५ से २ किलोग्राम प्रति एकड।
- उर्वरक : कि.ग्रा. / एकड।
  - कुल : ४०:२०:०० ना.फो.पो. कि.ग्रा./एकड।
  - बुआई के पहले : २०:२०:०० ना.फो.पो. कि.ग्रा./एकड।
  - बुआई के ३० दिन बाद : नाईट्रोजन २० कि.ग्रा./एकड।
  - बुआई के पहले ६ कि.ग्रा. झींक सल्फेट व फेरस सल्फेट प्रति एकड जमीन में अवश्य डाले।

खास मावजत

- एट्राजीन ५०% को १-१.५ कि.ग्रा./एकड की दर से, १० लिटर पानी में २०-२५ ग्राम मिलाकर बुआई के बाद व जमाव के पहले एक समान छिंटकाव करे।
- बुआई के १५ दिन बाद घने स्थान से पौधे उखाड कर रिक्त स्थानो पर रोपित करे।
- डाउनी मीलड्यु (कंदुआ रोग) के नियंत्रण के लिए बीज शोधित करके बोए और रोग ग्रसित बालिओं को सावधानी पूर्वक निकालकर जला दे।
- एक ही खेत में प्रति वर्ष बाजरा की खेती न करे।
- सिट्टा निकलने के बाद जमीन में जरुरी नमी बनाये रखे।

रीसर्च गेहूँ

वेस्टर्न सोना

- यह किस्म की बुआई दिसम्बर अंत तक कर सकते है।
- १०५ से ११० दीन में पकनेवाली किस्म।
- पौधे मजबूत एवं मध्यम उंचाइ के होते है।
- फुटाव की संख्या ज्यादा होती है।
- बाली मध्यम लंबी एवं घट्ट होती है।
- पत्तो का शुरु का हिस्सा चिपचिपाहट वाला होता है।
- बुआई के बाद ६० दिनों मे बाली नीकलनी शुरु होती है।
- दानें अण्डाकार एवं कठिन होते है।
- यह किस्म गेरुआ एवं अंगारियो रोग प्रतिरोधी है।
- १००० दानों का औसत : वजन ४७ से ४९ ग्राम है।
- शीध्र पकनेवाली एवं ज्यादा पैदावार देने की क्षमतावाली किस्म है।
- प्रोटीन की मात्रा ज्यादा होने से खाने में स्वादिष्ट।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे।

वेस्टर्न डबल वन

- समयसर बुआई के लिए उपयुक्त किस्म।
- ११०-११५ दिन में पकनेवाली किस्म।
- पौंधे की उंचाई मध्यम रहती है।
- फुटाव की सँख्या ज्यादा होती है।
- दाने कठोर होने से संग्रह करने में सरलता होती है।
- यह किस्म की गेरुं एवं अंगारीया रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति ज्यादा है।
- प्रोटीन की मात्रा ज्यादा होने से खाने में स्वादिष्ट है।
- १००० दानों का वजन ४६ से ४८ ग्राम तक होता है।
- देर से बुआई करने पर भी अच्छा उत्पादन देने की क्षमता रखती है।

वेस्टर्न डबलवन डिलक्स

- समयसर की बुआई के लिये उपयुक्त किस्म।
- ११० से ११५ दिन में पकनेवाली किस्म।
- पौंधो की उंचाई मध्यम और पौंधे मजबुत होते है।
- फुटाव की सँख्या ज्यादा होती है।
- बाली ज्यादा दानेवाली, गहरी और मजबूत होती है।
- बाली में एक समान कठोर दाने होने से संग्रह करने में सरलता होती है।
- गेरु एवं अंगारीया रोग के प्रति ज्यादा प्रतिकारक शक्ति रखती है।
- प्रोटीन की मात्रा ज्यादा होने से इस किस्म के आटे की रोटी, ब्रेड स्वादिष्ट और नरम होती है।
- १००० दानों का वजन ४८ से ५१ ग्राम तक होता है।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

वेस्टर्न मोर (चपाती गेहूँ)

- समयसर की बुआई के लिये उपयुक्त किस्म।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म (११५-१२० दिन)
- मध्यम उचाई, अधिक फुटाव, फैलनेवाला सख्त मजबुत पौंधा।
- डुंडी (बाली) में दानें की अधिक संख्या व समान कद और आकार के।
- दाने चमकीले, अंबर सफेद रंग के और प्रोटीन की मात्रा अधिक (१५.८ %)।
- गेरु एवं अंगारीया रोग प्रतिकारक।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे।

वेस्टर्न राज (चपाती गेहूँ)

- समयसर की बुआई के लिये उपयुक्त किस्म।
- मध्यम देरी से पकने वाली (११०-१२० दिन) किस्म।
- अंसत: मध्यम उंचाई, अधिक फुटाव, पौंधा सीधा, सख्त मजबूत, झूकता नहीं।
- डुंडी (बाली) मध्यम लंबाई की भरावदार।
- डुंडी में दाने की अधिक संख्या व समान कद व आकार के।
- दाने चमकिले, अंबर सफेद रंगके और प्रोटीन की मात्रा अधिक (१५.६%)।
- यह किस्म के दाने में जसत व लोह की मात्रा अधिक होने से खाने में पौष्टिक।
- गेरु व अंगारीया रोग प्रतिकारक।

गेहूं की खेती पद्धति

- बुआई का समय : समयसर बुआई : १० से २५ नवम्बर।
  जल्द बुआई : १० नवम्बर से पहले।
  देर से बुआई : २५ नवम्बर से २५ दिसंबर।
- बुआई अंतर : दो हार के बीच २२.५ से.मी. का फासला रखे।
- बीज की मात्रा : छोटे दानेवाली किस्म ४० किलोग्राम प्रति एकड।
  बडे दानेवाली किस्म ४८-५० किलोग्राम प्रति एकड।
- उर्वरक : २४:२४:०० ना.फो.पो.(५२ कि.ग्रा. डि.ए.पी. और ३२ कि.ग्रा. युरीया) कि.ग्रा. प्रति एकड बुआई के समय और प्रथम सिंचाई के समय २४ कि.ग्रा.(३२ कि.ग्रा. युरीया) नाईट्रोजन प्रति एकड।
- पोटाश की कमी हो तो १० कि.ग्रा. म्युरोट ओफ पोटाश बुआई के समय दे।
- जमीन में जसत और लोह की कमी हो तो ८ से १० कि.ग्रा. झींक सल्फेट और फेरस सल्फेट देने से उत्पादन बढता है।

खास मावजत

- बीज को एझोटोबेक्टर और पीएसबी का पट देकर बुआई करे (३० ग्राम / कि.ग्रा. बीज)।
- गेहुं को सिंचाई का समयपालन पर ख्रास ध्यान रखे, जिससे उत्पादन पर असर पडता है।
- बुआई के अलावा २२, ३८, ४५, ५६, ६७, ७८ और ९१ दिन पर पियत अवश्य दे।
- दिमक के नियंत्रण के लिए बीज को क्लोरोपायरीफोस का पट देकर बुआई करे (४२५ मी.ली. दवाई/५ लीटर पानी में द्रावण बनाकर १०० कि.ग्रा. बीज को पट दे)।

संशोधित चवली (लोबीया)

वेस्टर्न एवरग्रीन

- सब्जी और दाने के लिये अनुकुल किस्म।
- बारीश, रवि और ग्रीष्म ऋतु के लिये अनुकुल।
- पौधा मध्यम उंचाईवाला, सीधा और डाली झुकती नहीं है।
- हरी, भरावदार, मुलायम मध्यम लंबाई की फली।
- फली में रेसा का प्रमाण बहुत कम, हरी फली में दाना उपसता नही है।
- हरी फली की प्रथम चुनाई ४०-४५ दिन में आती है।
- चुनाई १० बार हो सकती है।
- यह किस्म पिलीया (यलो वेईन मोझेक वायरस) और सफेद गेरु रोग के सामने प्रतिकारक शक्ति रखती है।
- पका सुखा दाना सफेद रंग का होता है।
- कम उष्णतामान यानी ठंड की ऋतु में भी फली आती है।

रासयणीक खाद्य का जरुरत मुताबिक उपयोग करे

संशोधित चवली (लोबीया)

वेस्टर्न अनंतहर्ष-18

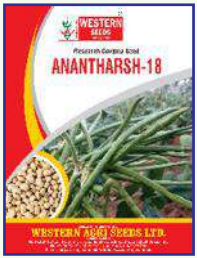

- यह किस्म सब्जी और दाने के लिये अनुकुल।
- बारीश और ग्रीष्म ऋतु के लिये अनुकुल।
- पौधा मध्यम उंचाई का, मुख्य शाखा से वेला (Trailing) निलकता है।
- हरी, भरावदार और मुलायम मध्यम लंबाई की फली।
- हरी फली में कम रेसा और हरे रंग की फली होने से सब्जी स्वादिष्ट होती है।
- मध्यम लंबाई की भरावदार फली, ४५ से ५० दिन में आना शरु होती है।
- चुनाई १०-१२ बार हो सकती है।
- यलो वेईन मोझेक वायरस और सफेद गेरु रोग के प्रति प्रतिकार।
- पका सूखा दाना सफेद रंग का होता है।

चवली (लोबीया) की खेती पद्धति

- बुआई अंतर : ४५ X २० से.मी.।
- बीज की मात्रा : ८ से १० किलोग्राम प्रति एकड।
- उर्वरक : ०८:१६:०० ना.फो.पो. किलोग्राम प्रति एकड।

खास मावजत

- बीज को राईझोबीयम कल्चर का पट अवश्य दे।
- प्रति एकड ४० किलोग्राम डि.ए.पी. बुआई के पहले जमीन में दे।
- चूसनेवाले कीटक से बचने के लिये सीस्टेमेटीक कीटनाशक डाईमिथोएट और मिथाईल डीमेटोन का समयांतरे छंटकाव करे।
- फूल और फली आने के समय मोनोक्रोटोफोस और प्रोफेनोफोस का छंटकाव करे।
- चवली को ज्यादा नाईट्रोजन न दे, ज्यादा पियत न करे।
- प्रति एकड ६ कि.ग्रा. झींक सल्फेट और फेरस सल्फेट बुआई के पहेले जमीन में दे।

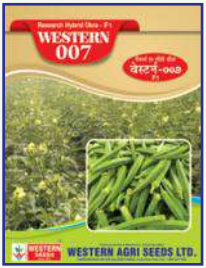

रिसर्च हा.भिंडी

वेस्टर्न ००७

- ग्रीष्म और बारीश की ऋतु में बोई जानेवाली संकर किस्म।
- पौधा मध्यम उंचाई का और ८ से १० फलाउ शाखावाला, सीधा बढनेवाला।
- बुआई के ३५ से ४० दिन से फूल आना शरु होता है और फली की चुनाई ४५ से ५० दिन से शरु होती है।
- फली गाढे हरे रंग की, पतली, १२-१५ से.मी. लंबी मुलायम होती है।
- फली पर रुवांटी (कांटे) कम और मुलायम होने से चुनाई सरल रहती है।
- फली बडी होने पर मुलायम रहती है, बीज कम और दिखते नहीं है।
- पौधे की दो गांठ के बीच कम अंतर होने से पैदावार ज्यादा आती है।
- यह रसचूसक किटक और हरि पिल्लु के उपद्रव के सामने अशत: प्रतिकारक शक्ति रखती है।
- यह पिलीया (यलो मोझेक वायरस) रोग के प्रति प्रतिकारक शक्ति रखती है।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे।

संशोधित भिंडी
अनंतहर्ष-८

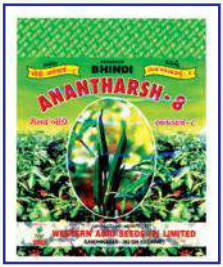

- ग्रीष्म और बारीश की ऋतु में बोई जानेवाली किस्म।
- पौधा कम उंचाई का और ८ से १० फलाउ शाख्रावाला, सीधा बढनेवाला।
- बुआई के ३० से ३५ दिन से फुल आना शरु होता है और फली की चुनाई ४० से ४५ दिन से शरु होती है।
- फली हरे रंग की, पतली, मुलायम और मध्यम लंबाई १० से १२ से.मी.।
- फली बडी होने पर भी मुलायम रहती है, बीज उपसते नहीं है।
- फली पर कांटे (रुवाटी) कम और मुलायम होने से चुनाई सरल रहती है।
- पौधे की दो गांठ के बीच अंतर कम होने से और शाख्राए नीचे से निकलने से पौधे की उंचाई कम रहती है।
- यह रस चूसक किटक और हरि पिल्लु के उपद्रव के सामने प्रतिकारक किस्म है।
- यह पीलीया (यलो मोझेक वायरस) रोग के प्रति प्रतिकारक किस्म है।

वेस्टर्न सीड्स, अपना सीड्स।

भींडी की खेती पद्धति

- बुआई का समय : बारीश की ऋतु : जुन-जुलाई, ग्रीष्म ऋतु : फरवरी-मार्च।
- बुआई अंतर : बारीश की ऋतु : ६० X ३० से.मी.।
  ग्रीष्म की ऋतु : ४५ X ३० से.मी.।
- बीज की मात्रा : २ से ३ कि.ग्रा./एकड।
- उर्वरक : बुआई के पहले प्रति एकड ३०:२०:२० कि.ग्रा. ना.फो.पो.।
  फूल आने के समय ३० कि.ग्रा. नाईट्रोजन प्रति एकर।
  संकर भींडी की किस्म के लिये नाईट्रोजन की मात्रा।
  ३० कि.ग्रा. के बदले ६० कि.ग्रा. रखे।

खास मावजत

- बुआई के पहले बीज को ईमीडाक्लोप्रीड और थायोमेथोक्झाम की मावजत अवश्य दे।
- बीज की बुआई निर्धारीत अंतर पे करे।
- बारीश की ऋतु में जरुरत होने पे पियत करे और ग्रीष्म ऋतु में १०-१२ दिन के अंतराल में पानी दे।
- भींडी में पौधे को काटनेवाली (Shoot Borer) कीडे का उपद्रव आने पर नुकशानवाली शाख्रा को तोड कर दूर करे, फलीको ख्रानेवाला कीडे के नियंत्रण के लिये क्वीनालफोस २५ ई.सी., क्लोरोपायरीफोस २० ई.सी. और एमानेक्टीन बेन्झोएट का जरुरत पडने पर छिंटकाव करे, भींडी में कथीरी (Mites) के नियंत्रण के लिए डायकोफोल और केल्थेईन का छिंटकाव करे।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

संशोधित गुवार

अनंतहर्ष-९

- पौधा शाखा रहित, मध्यम उंचाई का होता है।
- पौधे के निचले हिस्से से फली गुच्छे में आती है, पुरे पौधे पे फली नजदीक आती है।
- फली १० से १२ से.मी. लम्बी, मध्यम चौडाई की मुलायम और गुच्छे में एक साथ तैयार होती है।
- फुल ३५ से ४० दिन में आना शरु होते है और पहली चुनाई ४५ से ५० दिन से शरु होती है।
- फली हरे रंग की, बिना रेशेवाली, अल्प विकसीत बीजवाली, मुलायम होने से सब्जी के लिये उत्तम है।
- यह किस्म कालवण (बेक्टेरीयल ब्लाईट) रोग के सामने प्रतिकारक है।
- वर्षा में बिन पियत और ग्रीष्म में पियत से बुआई के लीये उपयुक्त ।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे ।

वेस्टर्न अवन्तिका

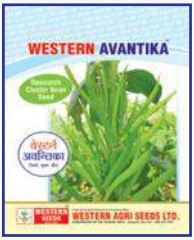

- पौधा शाखा रहित मध्यम उंचाई का होता है।
- पौधे के निचले हिस्से से फली गुच्छे में आती है, गुच्छे में फली एक साथ विकसीत होने से चुनाई में अनुकुल रहती है।
- फुल ३० से ३२ दिन में आना शरु होते है और पहली चुनाई ४० दिन में आती है।
- फली १२ से १५ से.मी. लम्बी, पतली और मुलायम होती है।
- फली हरे रंग की, बिना रेशे और अल्प विकसीत बीजवाली होती है, सब्जी बनाकर खाने के लिये उत्तम है।
- यह किस्म कालवण (बेक्टेरीयल ब्लाईट) रोग के सामने अंशत: प्रतिकारक है।

पौधे लगाये बारीश लाये ।

गवार की खेती पद्धति

- बुआई का समय : बारीश की ऋतु : जुलाई - अगस्त, ग्रीष्म ऋतु : फरवरी-मार्च।
- बुआई अंतर : ४५ X २० से.मी.।
- बीज की मात्रा : प्रति एकर ४ किलोग्राम।
- उर्वरक : प्रति एकड १०:२०:०० किलोग्राम/ना.फो.पो. बुआई के पहले जमीन में दे, साथ में ६ कि.ग्रा. झींक सल्फेट और फेरस सल्फेट अवश्य दे।

खास मावजत

- ग्रीष्म ऋतु की बुआई के समय ज्यादा ठंड हो तो, बीज को दो घंटे चूने के पानी में रखकर, सुखाकर बुआई करने से बीज का स्फूरण अच्छा होता है।
- बीज को बुआई के पहले ईमीडाक्लोप्रीड या थायोमेथोक्झाम की मावजत अवश्य दे।
- गवार की फसल को जरुरत से ज्यादा नाईट्रोजन और पानी न दे।
- पौधे पर फूल आने तक पानी देने की मात्रा व संख्या नियंत्रित करे।
- गुवार में आनेवाला बेक्टेरीयल ब्लाईट के नियंत्रण के लिये स्ट्रोप्टोसायकलीन (२ ग्राम / १० लिटर पानी) और कोपर ओकझीक्लोराईड (४० ग्राम / १० लिटर पानी) का छंटकाव करे।

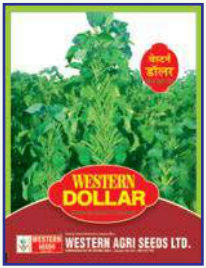

संशोधित गम गवार

वेस्टर्न डोलर

- दाने की उपज के लिये उत्तम किस्म।
- पौधा कम उंचाई का (७० से ८५ से.मी.) और अर्धखुली शाखाओवाला।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म (१०० से ११० दिन)।
- मध्यम लंबाई की फली गुच्छे में आती है, फली पकने पर झडती नही है।
- दाना क्रीमी सफेद रंग का, मध्यम कद का, दाने में गम की मात्रा ३१ प्रतिशत।
- पौधे पर फली एकसाथ पकती हे।
- कालवण (बेक्टेरीयल ब्लाईट) रोग के प्रति प्रतिकारक।
- वर्षा में बिन पियत और ग्रीष्म में पियत से बुआई के लीये उपयुक्त।

रासयणीक खाद्य का जरुरत मुताबिक उपयोग करे

वेस्टर्न समृद्धि

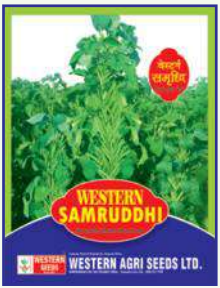

- सोटीया प्रकार का ज्यादा उंचाई (९० से १०० से.मी.) वाला पौधा।
- जल्द पकनेवाली किस्म (८५ से ९५ दिन)।
- पौधे के निचले हिस्से में फली गुच्छे में आती है।
- मध्यम लंबी भरावदार फली, मध्यम कदका क्रिमी सफेद रंग का दाना।
- पौधे पे फली एकसाथ पकती है और पकने पर झडती नहीं है।
- दाने में गम की मात्रा ३२ प्रतिशत।
- कालवण (बेक्टेरीयल ब्लाईट) रोग के प्रति प्रतिकारक है।

गम गवार की खेती पद्धति

- बारीश और ग्रीष्म ऋतु में बुआई के लिये उपयुक्त किस्म।
- बुआई का समय : बारीश की ऋतु अगस्त - सप्टेम्बर
  (राजस्थान में जुलाई-अगस्त)
  ग्रीष्म ऋतु : फरवरी
- बुआई अंतर : फलद्रुप जमीन : ४५ X २० से.मी.
  कम फलद्रुप जमीन : ३० X १५ से.मी.
- बीज की मात्रा : प्रति एकड ८ से १० किलोग्राम
- उर्वरक : प्रति एकड १०:२०:०० किलोग्राम ना.फो.पो. बुआई के पहले जमीन में दे, साथ में ६ कि.ग्रा. झींक सल्फेट और फेरस सल्फेट अवश्य दे।

खास मावजत

- ग्रीष्म ऋतु की बुआई के समय ज्यादा ठंड हो तो बीज को दो घंटे चूने के पानी में रखकर, सुखाकर बुआई करने से बीज का स्फूरण अच्छा होता है।
- गवार की फसल को जरुरत से ज्यादा नाईट्रोजन और पानी न दे।
- बारीश की ऋतु में खेत में पानी भराव न हो उसका खास ध्यान रखे।
- पौधे पर फूल आने तक पानी देने की मात्रा व संख्या नियंत्रित करे।
- गुवार में आनेवाला बेक्टेरीयल ब्लाईट (कालवण) के नियंत्रण के लिये स्ट्रेप्टोसायकलीन (२ ग्राम/१० लीटर पानी) और कोपर ओक्झीक्लोराईड (४० ग्राम/१० लिटर पानी) का छिंटकाव करे।

संशोधित चना

वेस्टर्न प्रताप

- चने की प्रजाति : देशी
- ज्यादा उत्पादन देनेवाली उत्तम गुणवत्तायुक्त किस्म ।
- सिंचित और असिंचित क्षेत्र के लिये अनुकूल किस्म ।
- जल्दी पकनेवाली किस्म, पाक अवधी ९०-१०० दिन ।
- आकर्षक पीले रंग के बडे और खाने के लिये उत्तम दाने ।
- पौधा सीधा बढनेवाला और ५-६ शाखावाला ।
- १०० दाने का वजन अंदाजित २३ से २४ ग्राम ।
- सुकारा और स्टन्ट वाईरस के सामने मध्यम प्रतिकारकतावाली किस्म ।
- प्रोटीन की मात्रा (२३.५ %) ।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे ।

संशोधित चना

वेस्टर्न चेतक

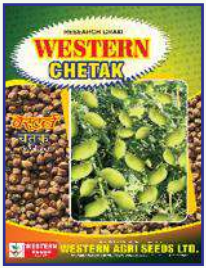

- चने की प्रजाति : देशी
- सिंचित और असिंचित क्षेत्र के लिये अनुकूल किस्म ।
- ज्यादा उत्पादन देनेवाली, उत्तम गुणवत्तायुक्त दानेवाली किस्म ।
- आकर्षक लाल रंग का दाना, खाने के लिए उत्तम ।
- पाक अवधि ११० से ११५ दिन ।
- पौंधे की उंचाई अंशत: ज्यादा : ३५ से ४५ से.मी.
- लंबी प्रारंभिक शाखाए और अर्ध फैलाने वाला पौंधा ।
- पौंधे का सुखना (Wilt) और स्टन्ट वायरस रोग प्रतिकारक ।
- दाने का कद मध्यम और १०० दाने का वजन २४ से २६ ग्राम ।
- प्रोटीन की मात्रा ज्यादा (२४.%) ।

वेस्टर्न सीड्स, अपना सीड्स ।

संशोधित चना

वेस्टर्न बलवान

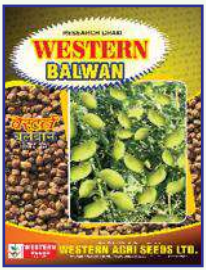

चने की प्रजाति : देशी

- सिंचित और असिंचित क्षेत्र के लिये अनुकूल किस्म।
- पाक अवधि : ९५ से १०० दिन।
- पौंधे की उंचाई अंशत: ज्यादा : ४० से ४५ से.मी.
- लंबी प्रारंभिक शाखाए और अर्ध फैलाने वाला सीधा पौंधा।
- पौंधे का सुखना (Wilt) और स्टन्ट वायरस रोग प्रतिकारक।
- दाने का कद मध्यम और लाल रंग का, १०० दाने का वजन २४ से २६ ग्राम।
- प्रोटीन की मात्रा ज्यादा (२३.८%)।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

चने की खेती पद्धति

बुआई

- बौनी (बुआई) : १५ ओक्टोबर से १५ नवेम्बर।
- बुआई का अंतर : ३० से ४५ से.मी.।
- बीज की मात्रा : २५-३० कि.ग्रा. प्रति एकड।

खास मावजत

- बीज को राईझोबीयम कल्चर की मावजत अवश्य दे।
- प्रति एकड ८० कि.ग्रा. D.A.P. बुआई के पहेले जमीन में दिजीए।
- बीज की बुआई के पहले ०३ ग्राम कार्बान्डाझीम का पट प्रति किलो अवश्य दिजीएं।
- बुआई के अलावा २०,४० और ६० दिन पर पियत अवश्य दिजिएं।
- पौंधे पर फुल आने के समय (४५-५० दिन) और बाद में २० दिन के बाद क्विनालफोस, डायक्लोरोफोस और अैमानेकटीन बेन्झोएट का छंटकाव करें - जो हेलीयोथीस (हरी इल्ली) का नियंत्रण करेगा।
- खेत में पानी का भराव न होने दे।
- शीतकाल में ओले पडने के समय पियत अवश्य दे।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे।

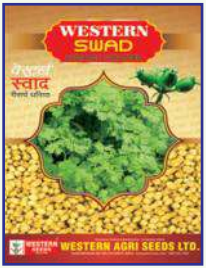

रीसर्च धनिया

वेस्टर्न स्वाद

- पौधा मध्यम उंचाई का (५० से ६० से.मी.), अधिक शाखाएवाला, शाखाए खुल्ली।
- मध्यम देरी से पकनेवाली (१०० से ११० दिन) किस्म।
- सिंचीत व असिंचीत बुआई के लिए अनुकुल।
- दाने के लिये उत्तम किस्म। मध्यम कद के भरावदार हरे रंग के दाने।
- पौधे पे चक्कर की संख्या २० से २५, सुगंधित तेल की मात्रा ०.५ से १.० प्रतिशत।
- सुकारा, सफेद गेरु (पाउडरी मीलड्यु) और चुसक किटक के सामने अंशत: प्रतिकारक किस्म।
- रसोई में हरा धनिया / पान का उपयोग कर सकते है।

पौधे लगाये बारीश लाये।

रीसर्च धनिया

वेस्टर्न सुगंधा

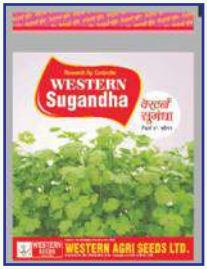

- रसोई में हरे पत्ते के उपयोग के लिये उत्तम किस्म।
- १२० से १३० दिन में पकने वाली किस्म
- पौधे की कम उंचाई (२५ से ३० से.मी.), अधिक शाखाए एक साथ निकलती है।
- पत्तियां बडी लम्बी भरावदार और गहरे हरे रंग की होती है।
- पत्तियो में रेसा बहुत कम होता है।
- पौधे पर देरी से फूल आते है, ज्यादा कटाई (४-५) के लिये उत्तम किस्म।
- पौधे को सूखना रोग के सामने अंशत: प्रतिकारक किस्म।
- खस्ता फफूंदी के सामने प्रतिकारक किस्म।
- दाने में सुगंधित तेल की मात्रा ज्यादा, मध्यम भरावदार हरे रंग के दाने।

रीसर्च धनिया

वेस्टर्न संगम

- अंशत: खुला और अधिक शाखा वाला पौंधा।
- १२० से १३० दिन में पकने वाली किस्म
- बडी-चौडी एवं मुलायम पत्तियां।
- पौंधे पर अधिक संख्यामें गहरेहरेरंग की पत्तियां।
- पौंधे की उचाई ४५ से ५० से.मी.।
- ज्यादा कटाई प्रकारकी किस्म, पौंधे पर फूल देरी से आते हैं।
- पत्तियां, शाखाए और बीज से आहलादक सुगंध आती हैं।
- पौंधे के सूखने के रोग (वील्टींग) और खस्ता फफूंदी रोग प्रतिकारक।
- बीज में सुगंधित तेल की मात्रा ज्यादा।
- दाने के लीये उत्तम, रसोई में हरी पत्तियों का उपयोग कर सकते है।

रासयणीक खाद्य का जरुरत मुताबिक उपयोग करे

धनिया की खेती पद्धति

- बुआई का समय : ओक्टोबर - नवेम्बर।
- सब्जी धनिया की बुआई ओक्टोबर से जनवरी तक कर सकते है।
- बुआई अंतर : हरे पत्ते के लीये २०X ५ से.मी.।
  दाने के लीये ४५ X १५ से.मी.।
- बीज की मात्रा : हरे पत्ते के लीये १२ से १५ कि.ग्रा./ एकड।
  दाने के लीये ८ किलोग्राम प्रति एकड।
- उर्वरक : बुआई के पहले १०:१०:०० ना.फो.पो. किलोग्राम प्रति एकड चास में दे।
  बुआई के ३० दिन के बाद १० कि.ग्रा. प्रति एकड नाईट्रोजन दे।
  सब्जी धनिया की हर कटाई के बाद प्रति एकड १० कि.ग्रा. नाईट्रोजन अवश्य दे।

खास मावजत

- बीज को बुआई के पहले हल्के से पटिये से घिसकर दो फाड कर दे।
- धनिया बीज की दो फाड करने से स्फूरण जल्द होने के साथ बीज की मात्रा कम लगती है।
- धनिया की बुआई के पहले इमीडाक्लोप्रीड या थायोमेथाक्झोन की मावजत अवश्य दे।
- धनिया के खेत में पानी का भरभराव न हो इसका ध्यान रखे।
- प्रति १२-१५ दिन के अंतराल पर पानी दे।

जल ही जीवन है, इसका मूल्य समझे ।

रीसर्च सौंफ

वेस्टर्न हरियाली

- सीधी बुआई और पुन: बुआई के लिये उपयुक्त किस्म।
- पौधे की मध्यम उंचाई (१४०-१६० से.मी.), ज्यादा शाखाए (१०-१२) जमीन नजीक से निकलती है।
- पौधे पर १५-२० बडे फूल चक्कर।
- मध्यम देरी से पकनेवाली किस्म।
  खरीफ : १९० से २१० दिन।
  रबी : १६० से १८० दिन।
- पौधे की शाखा प्रशाखा सीधी, अर्धखुला मजबुत पौधा।
- सुकारा रोग के सामने प्रतिकारक व चूसिया कीटक सामने अंशत: प्रतिकारक।
- सुगंधित तेलकी मात्रा अंदाजित १.८ से २.५%।
- दाना पकाने के लिए व कच्चे दाने के लिये उपयुक्त किस्म।

सौंफ की खेती पद्धति

- बुआई का समय : खरीफ : अगस्त (पुन: बुआई)।
  रबी : अक्टुबर - नवम्बर (सीधी बुआई)।
- बुआई अंतर : खरीफ : ९० X ६० से.मी.।
- रबी : ९० X ४५ से.मी. ।
- बीज की मात्रा : पुन: बुआई १.० से १.५ कि.ग्रा./२०० चो.मी. नर्सरी
- सीधी बुआई २.० से २.५ कि.ग्रा./एकड।
- उर्वरक : ६०:२४:०० ना.फो.पो. कि.ग्रा./एकड।
  बुआई के पहले : २४:२४:०० ना.को.प्रो. कि.ग्रा./एकड
  बुआई के बाद : २८ कि.ग्रा. नाईट्रोजन प्रति एकड पुन:
  बुआई के ३० और ६० दिन के बाद।

खास मावजत

- खरीफ फसलकी पुन: बुआई करे और रबी फसलकी सीधी बुआई करे।
- बीज की बुआई के पहले इमीडाक्लोप्रीड या थायोमेथाक्झोम किटनाशक की मावजत दे।
- फसल की बुआई पूर्व-पश्चिम करे।
- पौधे के पीले पत्ते और नाजुक शाखाए तोडकर दूर करे।
- मेन्कोझेब २५ ग्राम/१० लिटर पानी, देशी साबुन का द्रावण में मिलाकर छंटकाव करे।
- कोपर ओक्सीक्लोराईड ४ ग्राम प्रति लिटर का द्रावण बना के पौधो के नजदीक जमीन में दे।
- १० से १२ दिन के अंतराल पर पियत अवश्य करे, खेत में ज्यादा पानी भराव न होने दे।
- खरीफ बुआई की फसल को डिसम्बर - जनवरी में नियंत्रित पियत करे।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे ।

रीसर्च ईसबगुल

वेस्टर्न निर्मल

- जल्द और एकसाथ पकनेवाली किस्म।
- शाख्राए जमीन नजदीक से नीकलती है, सभी शाख्रा की वृद्धि एकसाथ होती है।
- पौधे पर भरावदार दाने वाले चक्कर लगनेवाली किस्म।
- पकने के दिन १०० से ११०।
- डूंडी की लंबाई अंदाजित ५ से ५.५ से.मी.।
- पौधे पर डूंडी की संख्या अंदाजित ४० से ४५।
- ज्यादा मात्रा में विटामीन 'ई' वाली किस्म।
- डाउनी मिलड्यु रोग के सामने प्रतिकार शक्ति वाली किस्म।
- बीज पकने पर पौधे पर जमे रहते है।

वेस्टर्न सीड्स, अपना सीड्स।

ईसबग्ुल की खेती पद्धति

बुआई :

- बुआई समय : २० नवम्बर से २० दिसम्बर।
- बुआई अंतर : बीज को छांट कर बुआई किजीए।
- बीज की मात्रा : २ से २.५ कि.ग्रा. प्रति एकड।
- उर्वरक : प्रति एकड बुआई के पहेले जमीन में १५ कि.ग्रा. **D.A.P** और ०८ कि.ग्रा. युरीया दिजीए, ३० दिन के बाद ०८ कि.ग्रा. युरीया शाम के समय दिजीये।

खास मावजत

- बीज की पसंदगी नयी फसलो से किजीए, पुराने बीज का उगाव कम होता है।
- आईसोप्रोट्युरोन निंदण नाशक सक्रिय तत्व २०० ग्राम २०० लिटर पानी में मिलाकर बुआई के ८-१० दिन पहले छिंटकाव किजीए।
- बीज की मेटालेक्झील ३५ **S.D.** ४ ग्राम प्रति किलो मावजत किजीए।
- बुआई के बाद हलका सा पानी दिजीए बाद में ०६ दिन के बाद हलका पानी दिजीए।
- पाक की बुआई के अलावा २०-२५ दिन के अंतराल में तीन पियत किजीए, फुल और दाने की अवस्था में पियत अवस्य करें।
- जमीन में पानी का भराव न होने दे।

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे।

घास चारे का बाजरा

वेस्टर्न-११५५

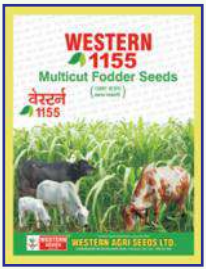

- बहुत ही उच्च उपज क्षमता का मल्टीकट रजका बाजरा चारा हाईब्रिड।
- मवेशियों के लिए उच्च गुणवत्तावाला पोषक चारा।
- पौधे की उंचाई २५०-३०० से.मी.।
- लम्बी चौडी ज्यादा पत्तिओवाला पौधा।
- प्रोटीन की औसत ९.१०%।
- खरीफ एवं ग्रीष्म ऋतु में बुआई के लिये उपयुक्त किस्म।
- पतले तने और गहरे हरे रंग की ज्यादा उत्पादक शाखाए।
- नरम तना और नरम गांढ (इंटरनोड)।
- प्रथम कटाई ४०-५० दिन और बाद में २५-३० दिन में कटाई के लिये उपलब्ध, ५-६ कटाई कर सकते है।
- प्रति कटाई में एक एकर में १२०-१३० क्विंटल चारा उपलब्ध होता है।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे।

चारा बाजरा की खेती पद्धति

- बुआई का समय : खरीफ : जुन - जुलाई।
  ग्रीष्म : फरवरी - मार्च।
- बुआई अंतर : ३० X १५ से.मी.।
- बीज की मात्रा : ४ - ५ किलोग्राम प्रति एकड।

खास मावजत

- खरपतवार के नियंत्रण के लिए एट्राजीन ५०% को १ - १.५ कि.ग्रा./एकड की दर से, १० लिटर पानी में २० - २५ ग्राम मिलाकर बुआई के बाद जमाव के पहले एक समान छिंटकाव करे।
- कटाई जमीन से ८ से १० से.मी. छोड के करे।
- उर्वरक :
  - बुआई के पहले : २० कि.ग्रा. नाईट्रोजन प्रति एकड।
  - प्रत्येक कटाई के बाद २० कि.ग्रा. नाईट्रोजन प्रति एकड।
  - १० से १२ दिन के समयांतर पर पानी अवश्य दे।

रीसर्च रजका बीज

वेस्टर्न सदाहरा

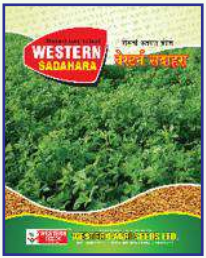

- रजके की त्रिसाली किस्म, तीन साल तक हरा चारा की कटाई करने के लिये उपयुक्त।
- सीधा बढनेवाला, ज्यादा वृध्धिवाला और उंचा बढने वाला पौधा।
- पौधे की उंचाई ६०-७५ से.मी. और लम्बी ज्यादा शाखाए निकलती है।
- पत्ते लंबे - चौडे और गाढे हरे रंग के होते है, पत्ते की संख्या ज्यादा।
- पौधे का थड और शाखाए मुलायम, रसदार होते है।
- कटाई के बाद जल्द फूट आती है, २०-२५ दिन के अन्तराल में कटाई कर सकते है।
- बुआई के बाद तीन साल तक कटाई कर सकते है।
- बारीश और ग्रीष्म ऋतु में भी कटाई कर सकते है।
- ज्यादा गरमी और बारीश में भी पौधा सडता नहीं है।

रीसर्च रजका बीज

वेस्टर्न हरा

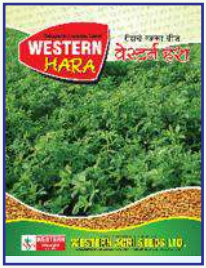

- रजके की एकसाली किस्म।
- पौंधे की उंचाई ७०-८० से.मी. और ज्यादा शाखाए (फूट) निकलती है।
- पत्ते गाढ हरा रंग के और लंबे चौड़े होते है।
- पौंधे का थड और शाखाएं मुलायम, रसदार होती है।
- कटाई के बाद जल्द फूट आती है, २५-३० दिन के अंतराल में कटाई कर सकते है।
- पौंधे सडने रोग प्रति प्रतिकारक है।
- खी ऋतु के लीये उत्तम चारे की किस्म।

रजका की खेती पद्धति

- बुआई का समय : १० - २० नवम्बर
- बुआई अंतर : २५-३० से.मी.
- बीज की मात्रा : ४ - ६ किलोग्राम प्रति एकड

खास मावजत

- उष्णतामान कम होने के बाद नवेम्बर के दूसरे सप्ताह में बुआई करीये।
- रजका की बुआई के लिये अमरखेल (डोडर) मुक्त बीज की पसंदगी करे।
- रजका की फसल में अमरखेल के दिखने पर उसे अवश्य दूर करे।
- एक ही खेत में रजका की सतत बुआई न करे।
- बुआई के पहले १०:२०:२० ना.फो.पो. कि.ग्रा. प्रति एकड जमीन में दे।
- ठंड की ऋतु में १२-१५ दिन और गरमी की ऋतु में १०-१२ दिन के अंतराल पर पानी दे।
- सदाहरा रजका में बारीश और ठंड की ऋतु में नाईट्रोजन १०-१२ कि.ग्रा. प्रति एकड अवश्य दे।
- खपतवार के नियंत्रण के लीये एट्राझीन ५०%, १ से १.५ कि.ग्रा. प्रति एकर १० लीटर पानी में २० से २५ ग्राम मिलाकर बुआई के बाद एक समान छिंटकाव करे।

रीसर्च मेथी बीज

वेस्टर्न शक्तिमान

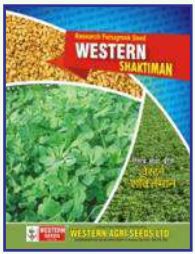

- दाने के उत्पादन के लिये उपयुक्त किस्म।
- हरी सब्जी के लिए भी उपयुक्त।
- पौधा सीधा, मजबुत और ५ से ७ शाख्रा और १० से १२ प्रशाख्रावाला।
- पत्तियां मध्यम लंबी, चौडी व हरे रंग की।
- फलियां एक साथ पकती है और पकने पर फटती नहीं है।
- पाक अवधी ११०-११५ दिन।
- दाना मध्यम कद के, धुंधले पीले रंग के।
- सफेद गेरु रोग के सामने अंशत: प्रतिकारक।
- पियत और बिनपियत बुआई के लिये उपयुक्त किस्म।

मेथी की खेती पद्धति

- बुआई का समय : नवम्बर का प्रथम पखवाडा।
- बुआई अंतर : ३० X १० से.मी.।
- बीज की मात्रा : ६ - ८ किलोग्राम प्रति एकड।

खास मावजत

- मेथी की फसल के खेत में पानी जमा न होने दे, सिर्फ नमी बनाये रखे।
- बीज की बुआई के पहले जमीन में २०:४०:०० ना.फो.पो. कि.ग्रा. प्रति एकड अवश्य डाले।
- १५ से २० दिन के समयांतर पे ४ - ५ पियत करे।
- बीजकी बुआई के बाद तुरंत पियत दे कर २०० ग्राम / एकड पेन्डिमीथीलीन का छींटकाव करे।
- मेथी की फसल की कटाई सुबह के समय में करे।

खेत की उत्पादन क्षमता अच्छी है तो वेस्टर्न बीज की बुआई करे।

संशोधित हाईब्रिड कपास

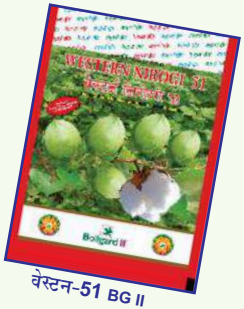

वेस्टन-51 BG II

वेस्टर्न-108 BG II

संशोधित बीटी हाईब्रिड कपास की किस्में (BG II)

विगत	वेस्टर्न-51	वेस्टर्न-108
पौधे की संरचना	मध्यम उंचा व खुला	उंचा व खुला
वानस्पतिक शाखाएं	३ से ४	३ से ४
फलवाली शाखाएं	८ से १२, लंबी डोंडे से भरपूर	१० से १५, लंबी, डोंडे से भरपूर
डोंडेका वजन(अंदाजित ग्राम)	४.० से ४.५	५.० से ५.५
डोंडे की संख्या	९५-१०५	११०-१२०
कपास(रुई)की गुणवत्ता	लंबे तार	लंबे तार
रसचूसक किटको से रक्षण	अंशत: प्रतिकारक	अंशत: प्रतिकारक
डोंडेकी ईल्ली के सामने रक्षण	प्रतिकारक	प्रतिकारक
फसल अवधि (दिन)	१६० से १८०	१६० से १८५

वेस्टर्न सीड्स, अपना सीड्स ।

वेस्टर्न-151 BG II

वेस्टर्न-555 BG II

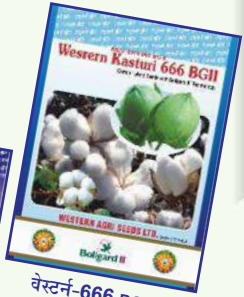

वेस्टर्न-666 BG II

वेस्टर्न-151	वेस्टर्न-555	वेस्टर्न-666
उंचा व खुला	मध्यम उंचा व खुला	मध्यम उंचा व खुला
४ से ५	४ से ५	३ से ४
१६ से १८, लंबी	१२ से १५, लंबी	१६ से १८, लंबी
डोंडे से भरपूर	डोंडे से भरपूर	डोंडे से भरपूर
४.५ से ५.५	५ से ६	४.५ से ५.५
१००-११०	९५-११०	११०-१२०
मध्यम लंबे तार	लंबे तार	लंबे तार
प्रतिकारक	अंशत: प्रतिकारक	अंशत: प्रतिकारक
प्रतिकारक	प्रतिकारक	प्रतिकारक
१५० से १७०	१५० से १७०	१६० से १८०

कृषि मे नई तकनीक का अमल करे ।

बीटी कपास की खेती पद्धति

- बुआई का समय : जुन मास।
- बुआई अंतर : १२० X ७५ से.मी.।
- बीज की मात्रा : १.० से १.२५० किलोग्राम प्रति एकड।
- उर्वरक : कुल १००:५०:०० ना.फो.पो. कि.ग्रा./एकड।
  बीज की बुआई के पहले : २५:५०:०० ना.फो.पो. कि.ग्रा./एकड।
  बुआई के ३०, ६० और ९० दिन के बाद : २५ कि.ग्रा. नाईट्रोजन प्रति एकड।

खास मावजत

- डोंडेकी गुलाबी ईल्ली से बचने के लिये बारीश होने के बाद बुआई करे।
- बुआई के पहले जमीन में प्रति एकड ८ से १० कि.ग्रा. मेग्नेशीयम सल्फेट, झींक सल्फेट और फेरस सल्फेट अवश्य दे।
- शोषक किटक नियंत्रण के लिये कीटनाशक दवा का छिंटकाव अवश्य करे।
- पौधे पर फूल आने के समय डोंडे की ईल्ली के नियंत्रण के लिये कीटनाशक दवा का एक छिंटकाव अवश्य करे।
- फसल को पानी कम मात्रा और नियंत्रित संख्या में दे।
- खेत में पानी का भराव न होने दे।
- फुल आने के समय विकृत रोझेट फूल दिखे तो अवश्य दूर करे।

सेन्द्रिय खाद्य का उपयोग करे, फर्टीलीटी बनाये रखे ।

ग्रीन इन्डिया सीड्स कंपनी के उत्कृष्ठ बिज

हमारे प्रमुख उत्पादन

रीसर्च मुंगफली
ग्रीन भवानी
ग्रीन दर्शन, ग्रीन प्रसाद
ग्रीन आरती

रीसर्च तील
ग्रीन पवन

रीसर्च हा. एरंडी
ग्रीन अंजली
ग्रीन माणेक
ग्रीन वलराम

रीसर्च हा. जीरा
ग्रीन चंदन

रीसर्च सरसौं
ग्रीन पोरवराज

रीसर्च मुंग
ग्रीन महाराजा

रीसर्च हा. बाजरा
ग्रीन-४४४
ग्रीन-५५५

रीसर्च गेंहू
ग्रीन बावा

रीसर्च चौली
ग्रीन यमुना

रीसर्च सोयाबीन
ग्रीन चेतना

रीसर्च भींडी
ग्रीन सिध्धी (F1)
ग्रीन - २७

रीसर्च गवार
ग्रीन गुरु

रीसर्च सौंफ
ग्रीन सुवास

रीसर्च ईसबगुल
ग्रीन सद्गुरु

GREEN INDIA SEEDS COMPANY™
GANDHINAGAR-382 028

ग्रीन इन्डीया सीड्स कंपनी

प्लोट नं. 802/28, वेस्टर्न हाउस, जी.आई.डी.सी. (एन्जी.) एस्टेट, सेक्टर - 28,
गांधीनगर - 382028, (गुजरात) भारत. फोन नं. 079 - 23212427

AN ISO 9001 CERTIFIED SEED COMPANY

राष्ट्रिय उत्पादकता बढानेमें अग्राणी वेस्टर्न सीड्स के "नवरत्न"

रीसर्च हा. एरंडी

वेस्टर्न-६, वेस्टर्न-६+ (प्लस) वेस्टर्न वीजे-६६+ (प्लस) वेस्टर्न वीजे-६६, वेस्टर्न-२७, वेस्टर्न मारुति, वेस्टर्न मुखी, वेस्टर्न सरपंच, वेस्टर्न अेवोर्ड, वेस्टर्न जेष्ठा

रीसर्च मूंगफली

वेस्टर्न-१८, वेस्टर्न-२०, वेस्टर्न-४४, वेस्टर्न-५१, वेस्टर्न अेचबी-५५, वेस्टर्न-६६, वेस्टर्न वरदान, वेस्टर्न महाबली, वेस्टर्न महाराणा, वेस्टर्न अंबर, वेस्टर्न धमाका

रीसर्च तिल

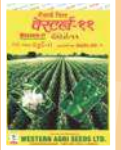

वेस्टर्न -११, वेस्टर्न समर्थ, वेस्टर्न तील ब्लेक

रीसर्च जीरा

वेस्टर्न सी-४५, वेस्टर्न सी-६०, वेस्टर्न जीवन प्राईम, क्युमेक्ष वेस्टर्न सी-६०

रीसर्च मुंग

वेस्टर्न महावीर, वेस्टर्न प्रोटो, वेस्टर्न शुरवीर

रीसर्च गेहू

वेस्टर्न डबल वन डीलक्ष, वेस्टर्न डबल वन, वेस्टर्न सोना(सरबती), वेस्टर्न गोल्ड, वेस्टर्न मोर, वेस्टर्न राज

रीसर्च हा. बाजरा

वेस्टर्न अेम-४५, वेस्टर्न अेम-४६, वेस्टर्न सेवा

रीसर्च गुवार

अनंतहर्ष-९, वेस्टर्न अवन्तिका

रीसर्च उडद

वेस्टर्न अमूल

रीसर्च हाईब्रीड कपास बीटी (बीजी-२)

वेस्टर्न निरोगी-५१, १०८, वेस्टर्न निरोगी-१५१, ५५५, वेस्टर्न कस्तुरी-५५५, ६६६, वेस्टर्न एक्ष्पोर्ट, वेस्टर्न प्रोफिट, वेस्टर्न विझा

रीसर्च चौली

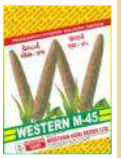

अनंतहर्ष-१८, वेस्टर्न अेवरग्रीन

रीसर्च सरसों

वेस्टर्न वीर, वेस्टर्न शारदा, वेस्टर्न कर्मवीर, वेस्टर्न जयवीर

रीसर्च धान

वेस्टर्न शक्ति, वेस्टर्न महाशक्ति

रीसर्च सौंफ

वेस्टर्न हरियाली

रीसर्च धनिया

वेस्टर्न स्वाद, वेस्टर्न सुगंधा (मल्टीकट)

रीसर्च मेथी

वेस्टर्न शक्तिमान

रीसर्च रजका

वेस्टर्न हरा

रीसर्च सोयाबीन

वेस्टर्न-१०१, वेस्टर्न-१०८

रीसर्च गम गुवार

वेस्टर्न डोलर, वेस्टर्न समृध्धि

रीसर्च भींडी

अनंतहर्ष-८, वेस्टर्न वर्षा, हा. भींडी वेस्टर्न-००७ (F1)

रीसर्च इसबगोल

वेस्टर्न निर्मल

रीसर्च गाजर

वेस्टर्न लाल

रीसर्च चना

वेस्टर्न प्रताप

रीसर्च रजका बाजरा

वेस्टर्न ११५५

समृद्धि का एकही नाम बोईए वेस्टर्न बीज कमाए

WESTERN SEEDS®
"MORE FOR ALL"
Since 1983

वेस्टर्न एग्री सीड्स लिमीटेड

कोर्पोरेट ओफिस : 802/11, वेस्टर्न हाउस, जी.आई.डी.सी. (एन्जी) अेस्टेट, सेकटर-28, गांधीनगर-382028 (गुजरात)

फोन : 079-23211891, 079-23212427, 8485901891

Email : info@westernagriseeds.com Website : www.westernagriseeds.com

समर्थ संतश्री प्रागदासबापा गोदडीया

प.पू.प्रागदासबापाकी रामवाडी
अन्नक्षेत्र ट्रस्ट, रामवाडी नं.1,
गीरनार रोड,
मुं.मो.जूनागढ - 362001 (गुजरात)
फोन : (0285) 2622876

प.पू.प्रागदासबापाकी राममढी
गाँव : जूनामाका, ता. हारिज
जि.पाटण

यह ट्रस्ट को दिया हुआ दान 80(G) के तहत आयकर से 50% मुक्त है ।